शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 12 | उदयपुर शनिवार 01 जुलाई 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कोयल का पुरुष कौआ

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

पक्षियों में हमारे यहां कोयल का बड़ा महत्व है। बसंत ऋतु की तो पहचान ही कोयल है और कोयल की पहचान है बसंत ऋतु, जब वह अपने पूरे पंचम स्वर में गाती हुई एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष की डाल पर फुदकती हुई देखी जाती है। कहा भी है-'बसंत काले समीपे काक: काक: पिक: पिक:।' बसंत काल आता है तब ही कोयल और काग की पहचान होती है। ठीक ही है, लेकिन इस कोयल की विडम्बना यह है कि इसकी जात में यह अकेली है। पुरुष होता ही नहीं। इसका पुरुष कौआ है। यह उसी से खाती-पीती है। कामायनीकार महाकवि जयशंकर 'प्रसाद' ने जब 'अहा कौन है पंचम स्वर से कोकिल बोला' लिख दिया तो सारा साहित्यिक समाज उनके पीछे पड़ गया। प्रसादजी को बाद में इस गलती का पता चला और बोले कि सुधार से छंद भंग हो जाएगा।

कोयल को सर्वत्र स्त्रीवाची के रूप में वर्णित किया गया है। नवविवाहिता को कई जगह कोयल की उपमा से विभूषित किया गया है। राजस्थान में विवाहोपरान्त लड़की की विदाई पर गाया जाने वाला गीत- 'थें तो छोड़ दादासा रो हेत कोयल बाई सिध चाल्या' बड़ा ही कारुणिक और ह्रद द्रावक वातावरण की सृष्टि करता है।

अन्य प्रान्तों के लोकगीतों में भी वधू को कोयल की ही उपमा से अभिमंडित किया है। गुजराती लोकगीत में - 'कोयलड़ी टहुके छै बेनी ने मांडवे'- 'कोयल राणी हालो आपणां देश मां रे।' कुमाऊं लोकगीत में- 'बागां दी ए कोयल बागे छोड्डी कत्थू चाल्यो ए।' मालवी लोकगीत में- 'वनखंड की ए कोयल वनखंड छोड़ कठे चाली।' भोजपुरी लोकगीत में- 'मोरा पिछुवारावा रे घनी बसवरिया ताहि चढ़ि कोयल री बोले रे बिरहिया' कहकर कोयल को वधू और विरहिणी के संदर्भ में कई बार याद किया है। कोयल की कुहु-कुहु विरह को उद्दीप्त करती है तब विरहिणी उसी के साथ अपने प्रियतम को संदेश भेजती है-

सुण-सुण ए कोयलड़ी म्हारो संदेशो ले जाजे ए
जाजे ए कोयलड़ी म्हारा पियूजी ने कीजे
थांणे गाम में बुलावे थांणी गोरड़ी ए

यों तो कोयल अन्य ऋतु में भी बोलती है पर तब कण्ठ उतना खुल नहीं पाता है। यह खुलता तो बसंत में ही है तब ही वह 'कुहु' की छवि लिए सारे वातावरण को मादक बना देती है। इस कुहु में कोयल का अपना विरह भी है जो उसकी बहिन का है। उस छोटी बहिन का जिसका नाम ही कुहु था जो उससे विलग हो गई। उसी को पुकार-पुकार कर कोयल पागल हो रही है। पगला रही है और सारे वनखंड को गूंजित कर रही है- 'कहीं है कुहु, कहीं है कुहु।'

सचमुच में अपनी बिरादरी में कोयल अकेली है। इसके साथ पुरुष वर्ग नहीं है। इसका पुरुष कौआ है। उसी के संसर्ग से इसके अण्डे होते हैं। ये अण्डे कागली के अण्डे जैसे ही होते हैं। अपने अण्डों को यह कागली के घोंसले में छोड़ आती है जहां कागा-कागली दोनों मिलकर उनकी सेवना करते हैं। जब अण्डों से बच्चे निकलते हैं तब कागा-कागली को पता चलता है और वे पछताते भी हैं।

लोककथा है कि कोयल और कुहु दोनों बहिनें थीं। दोनों का आपसी इतना घनिष्ट प्रेम था कि एक-दूसरे के बिना रह नहीं सकती थीं। कोयल बड़ी थी और छोटी थी कुहु। जंगल में विचरण करती हुई दोनों एक-दूसरे से जुदा हो गई। कोयल ने उसे बहुत ढूंढ़ा। वृक्ष-वृक्ष, डाल-डाल, पात-पात खोजा पर कुहु नहीं मिली। इस विरह में कोयल ने कुहु-कुहु की रट लगाते-लगाते अपने प्राण खो दिये। अगले जन्म ने भी वही कोयल उसे पुकारती ढूंढ़ रही है। ऐसे कई जन्म-जन्मान्तर हो गये, कोयल कुहु को निरन्तर खोजती भटक रही है।

यह कुहु की कथा अधिक है। कोयल की एक भिन्न कथा जो मुझे सुनने को मिली वह है-

किसी समय जंगल में भयंकर आग लगी। ऐसी आग कि सारी वनराई-वृक्ष-पहाड़ जलकर कोयला हो गये। आकाश तक काला कलूटा हो गया। कहीं कोई हलचल नहीं रही। न जमीन पर न आसमान में तब जगत जननी ने एक ऐसा पंखेरु पैदा किया जो शरीर से काला कलूटा था। उसने देवी की आराधना में गाना शुरू किया। इस पर देवी ने सपना दिया। पंखेरु बोला-

'मुझे कालेपन से मुक्त करो। सभी मुझसे घृणा करेंगे।' देवी बोली- 'जाति-बिरादरी के लिए कौए होंगे जो तुम्हारा मान-सम्मान करेंगे। तुम पूरे वनखंड में गूंजो। बसंत तुम्हारा स्वागत करेगा। तुम पंचम स्वर में कुहकोगी तब लोग तुम्हारे गुण गाते नहीं थकेंगे।'

यह कह देवी ने कौओं की पांत की पांत खड़ी कर दी। सारे कौए उसके इर्दगिर्द मंडराने लगे किन्तु उसने पाया कि वह तो उन्हीं जैसी बनी हुई है। उनमें और उसमें कोई अन्तर नहीं है। यह सोच उसने कुहकना प्रारंभ कर दिया। वह जोर-शोर से दिन-रात कुहकती ही रही तब देवी प्रगट हुई और बोली- 'तुम्हारी पीड़ा मुझे ज्ञात है। ला तुम्हारे पंख स्वर्णिम कर देती हूं। यह रंग उस ज्वाला का प्रतीक है जिसमें तुम बलगल कर भस्म हुई किन्तु कुन्दन की तरह निकल आई हो। तुम्हारी पवित्रता को लोग पहचान सकें अत: इसके प्रतीक स्वरूप तुम्हारे पांव उज्ज्वल कर देती हूं।' तब से कोयल बसंत विहंग बनी हुई है।

सचमुच में अपनी बिरादरी में कोयल अकेली है। इसके साथ पुरुष वर्ग नहीं है। इसका पुरुष कौआ है। उसी के संसर्ग से इसके अण्डे होते हैं। ये अण्डे कागली के अण्डे जैसे ही होते हैं। अपने अण्डों को यह कागली के घोंसले में छोड़ आती है जहां कागा-कागली दोनों मिलकर उनकी सेवना करते हैं। जब अण्डों से बच्चे निकलते हैं तब कागा-कागली को पता चलता है और वे पछताते भी हैं।

कोयल कागली से अपेक्षाकृत छोटी होती है। यह बसंत ऋतु में सर्वाधिक बोलती है जब इसका कण्ठ खुल पड़ता है। कोयल के सभी अण्डों से कोयल ही निकलती है। कभीक अपवाद स्वरूप कोई बच्चा निकल आता भी है तो वह पुरुषत्व विहीन होता है और तिरस्कृत जीवन ही व्यतीत करता है। ऐसे पुरुष-कोयल के पंख पर लाल धब्बा होता है।

एक रूप भारत : अनेक रूप भारत

-माणक तुलसीराम गौड़-

घुमक्कड़ स्वभाव, यायावरी मिजाज, भारतवर्ष के चारों कोनों को देखने की उत्कट इच्छा, प्रत्येक प्रान्त की संस्कृति को जानने की तमन्ना और वहाँ के निवासियों में घुल-मिलने की गहरी रुचि होने से अपने देश के आधे से अधिक भू-भाग में मुझे भ्रमण का सुअवसर मिला। कहते हैं कि जिसकी जैसी हार्दिक अभिलाषा होती है, ईश्वर उसे पूर्ण करता है।

मैंने जिन प्रदेशों की यात्राएँ कीं उनमें राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, बिहार, बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ है। मैंने सर्वत्र यह जानने की कोशिश की कि इन प्रान्तों में पुत्री को किस नाम से पुकारते हैं। राजस्थानी में बेटी को कोयलड़ी, चिड़कली। गुजराती में डीकरी। मराठी में मुलगी। भोजपुरी में बिटिया। उड़ीया में झियो। पंजाब में कुड़ी। कन्नड़ में मगलू। तमिल में पोन्नू। तेलगु में कुथुरू और मलयालम में मगलू के नाम से पुकारते हैं। जमाई को हिन्दी में दामाद, जमाता। राजस्थानी में जंवाई, पांवणा। गुजराती में जवांई, जमाई। मराठी में जावई। भोजपुरी में पांहुन। पंजाबी में जवई। उड़ीया में जोंई। कन्नड़ में अलिया। तमिल में मपिल्लै। तेलगु में अल्लाडु तो मलयालम में मरूमकन कहते हैं।

विवाह के पश्चात् जब दामाद प्रथम बार ससुराल आता है तो उसको नाश्ते में जो खिलाया जाता है उसे राजस्थानी में कलेवा या सिरावण में सीरो, जलेबी, घेवर, फीणी, पकौड़ी, कचौड़ी परोसते हैं। गुजराती में जलेबी, फाफड़ा, खाखरा, खमण-ढोकला, खांडवी, पातळा एवं मुठिया का नाश्ता करवाते हैं। मराठी में सीरा, जलेबी, उपमा, पोहा एवं मिसळ। भोजपुरी में हलवा, लौंगलता, नमकीन दाल की पूड़ी। कन्नड़, तेलगु, तमिल

तथा मलयालम में इडली, डोसा, वड़ा, सांभर, उपमा, उतपम, केसरी भात, मदुर वड़ा कहते हैं।

भोजन में राजस्थानी में लापसी, चावल में घी-शक्कर, मोयनदार मोटी रोटी में बहुत-सारा घी और शक्कर या गुड़, सब्जी गट्टे, केर, सांगरी, कूमटी की, अचार, चटनी, दही, रायता और पापड़ परोसा जाता है। गुजराती में मिक्स सब्जियों से बना उंदियो, श्रीखण्ड, पूड़ी, मीठी दाल या कड़ी, चावल। मराठी में पूरण-पोळी, बासूंदी, आमटी, वरण-भात, पौळी, भाजी। उड़ीया में दाल-चावल, (मूंगदाल) दही तथा परवल, आलू, गोभी की सब्जी। पंजाबी में लड्डू, बर्फी, दूध की मिठाई, चावल, दाल मखनिया, परांठे, दही-मट्ठा। कन्नड़, मलयालम, तमिल और तेलगु में रसम, सांभर, चावल, बिरयानी, नारियल की चटनी, दही-भात, रोटी, सब्जी, अनारसा गारलू, पुनालू प्रमुख है। भोजन केले के पत्तों पर परोसा जाता है।

हिन्दी क्षेत्र में बिटिया को साड़ी, लहँगा, ओढ़नी, महावर, काजल, बिंदी और वेणी दी जाती है तो दामाद को धोती-कुर्ता, पगड़ी या साफा, अंगोछा, मोजे और रूमाल और यथाशक्ति मुद्रा। राजस्थानी में बेटी को ओढ़नी, लहरियो, चुनरी, लहँगा, साड़ी, पेटीकोट, ब्लाउज, मेहन्दी, मौळी, काजल, टिकी। जंवाई को धोती, कुर्ता, साफा, गमछा और मोजे। गुजराती में डीकरी को साड़ी (साड़लो) के साथ ब्लाउज, लहँगा, मेहन्दी। भोजपुरी में साड़ी-ब्लाउज, लहँगा के संग टिकी, बिछिया, महावर तो दामाद-पाहुन को धोती जिसके कोने को हल्दी से रंगा जाता है। कुर्ते के साथ लाल रंग का गमछा व रुपये। उड़ीया में भी पुत्री को साड़ी, पेटीकोट, ब्लाउज और दामाद को धोती-कुर्ता, लाल रंग का गमछा व रुपये देने की परम्परा है। पंजाबी परम्परा में भी कुड़ी और जवई को वस्त्र एवं रुपये देकर विदा करने का चलन है। मराठी में कपड़े-लत्ते, साड़ी-चोई, बेटी के बालों में फूलों की वेणी। जावई को धोती-कुर्ता, टोपी, रूमाल, और मुद्रा। तमिल में सोड़वे (साड़ी), ब्लाउज (जेकेट), पेटीकोट।

-शेष पृष्ठ सात पर

अभिनंदनीय

हर बीमारी की जड़ पगथली में

आदमी का दिमाग हर समय किसी न किसी नई खोज में लगा रहता है। इसके लिए बड़ी शिक्षा, बड़ी प्रयोगशाला, बड़ा समय, बड़ा पैसा, बड़ी जगह भी जरूरी कही जाती है पर इसके अलावा भी वे लोग हैं जिन्होंने अपने ढंग से, अपनी समझ से, अपनी जिज्ञासा से, अपने आसपास से तिनका-तिनका ज्ञान हासिल किया और उस ज्ञान को जन कल्याणार्थ समर्पित कर दिया।

ऐसे ज्ञान जिज्ञासुओं में रामजी खत्री का नाम उभर कर आता है जो पंजाबी हैं, सिंधी पंजाबी पर जिन्हें सब रामजी के नाम से ही जानते हैं। जात न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान की तर्ज पर रामजी ने यह जाना कि सारी बीमारियों का केन्द्र पांव की पगथली है जिसे देखकर वे हर बीमारी का पता लगा इलाज शुरू कर देते हैं। उनका इलाज हींग लगै न फिटकरी जैसा है। कुछ लोग एक्युप्रेशर नाम देते हैं। मुख्यत: पांवों की उंगलियों को दबा कर, मसल कर इलाज करते हैं।

रामजी इलाज करते समय चुप नहीं रह बोलते रहते हैं। सुनने वाला कई बार बोर हो जाता है पर जिसे कुछ पाने की चाह रहती है वह बहुत सारी ज्ञान की बातें जानने को उत्सुक रहता है। वे कहते हैं कि पूरा शरीर बेलेंस सीट के मानीन्द है। हिसाब रखने वाला केवल देखभाल से आंक बता देता है। उसके पास न पैसा होता है न खर्च करने का अधिकार वैसे ही उनकी निगाह होती है। उनका काम समाधि जैसा है। बीमारी पकड़ में आ गई तो उसे ठीक करने में लगे रहते हैं।

जो बीमार है, शरीर उसी का है। पीड़ा भी वही भोग रहा है। ठीक करने वाले को भगवान ने बनाया है, ठीक करने का इलम दिया है सो उसे वह काम ईमानदारी से करते रहना है। रामजी बताते हैं, आजकल लोगों का ध्यान हर काम के पीछे कमाई का है। जो अच्छा नहीं कमाता है उसे ठीक नहीं समझा जाता तो फिर सेवा का काम कौन करेगा?

रामजी को ईश्वर पर पूरा भरोसा है और वे उसी को हाजिर-नाजिर कर काम करते हैं। कहते हैं, किसी का जो अंग दुखी है वे उसे बिना छुए दूसरे स्वस्थ अंग का सहारा ले इलाज कर देते हैं। एक टांग किसी की छोटी है तो उसे दूसरी के बराबर कर देंगे। सारा इलाज उनके दोनों हाथों की उंगलियां करती हैं पर पूरा शरीर चेतन रखना पड़ता है। इलाज के समय तेल का प्रयोग करते हैं। ऐसे मौके भी आये कि एक का इलाज करते-करते अनेक लोग आ गये तो सबका इलाज करते-करते पन्द्रह घंटे तक उन्हें काम करना पड़ा। वे बताते हैं कि इलाज के समय वे कुछ भी खाते-पीते नहीं हैं।

उन्होंने जिसका इलाज किया, वह स्वस्थ हुआ है। किसी में देर लग जाती है तो वे भगवान से प्रार्थना करते हैं कि आपके निमित्त इलाज कर रहा हूं। मुझे सद्बुद्धि दो ताकि रोगी जल्दी ठीक हो सके। रामजी बताते हैं कि वे कई बार देरी हो जाने पर घर नहीं जाकर फुटपाथ पर सो जाते हैं तब पुलिस पकड़ थाने ले जाती है। वे जब बताते हैं कि मैं चोर, उचक्का नहीं हूं, बीमार की, कोई सी बीमारी हो, इलाज करता हूं। थाने से जो भी जुड़ा होता है वह कहां स्वस्थ होता है तब उनकी परीक्षा लेने किसी को उनके सामने कर दिया जाता है। वे बताते हैं, कई थानों में उन्होंने किसी की घुटने की, किसी के कमर दर्द की तो किसी की अन्य बीमारी का हाथोंहाथ इलाज कर थानों से मुक्ति पाई।

एकाध बार चौराहे पर हेलमेट नहीं होने से पकड़े गये तब भी वहीं बीमार का इलाज कर मुक्ति पाई। रामजी श्मशान में भी रहे। कई दिन निराहार भी रहे। बीमारी और बीमार की बड़ी उम्र भी हो तो उसका भी इलाज करते हैं। कई बार दूर तक के शहरों में भी उन्हें ले गये। सुबह 7 से लेकर रात्रि 10 बजे तक उनकी सेवा-चर्या शुरू रहती है।

रामजी ने कई बड़े-बड़े डाक्टरों के नाम भी फटाफट बताये जिनका इलाज किया। वे नामधारी डाक्टर हैं और बड़े-बड़ों का इलाज करते हैं। डॉ. आर. के. अग्रवाल अक्सर कहा कहते थे कि बड़े लोगों की बीमारी बड़ी, इलाज बड़ा, डॉक्टर बड़ा, फीस बड़ी, सब कुछ बढ़ाचढ़ा तामजाम हो तो ही उनकी बीमारी ठीक होती है। इसीलिए साधारण आदमी समझू होते हुए भी, अच्छा इलाज करते हुए भी लोगों की समझ में कम या नहीं बैठता है।

रामजी कहते हैं, सभी युगों में, सभी तरह के लोग रहे हैं। बीमारियां भी रहीं और उनके इलाज वाले भी। हमारी खोज चलती रहे तो जिनके पास साधन सुविधाएं नहीं हैं वे भी अपना इलाज पा सकते हैं। प्रकृति और वो सबका मालिक, सबसे बड़ा पुरुष सबको देखता है और सुख चैन देता है पर हमारा विश्वास डगमगाता है इसलिए भी हम स्वस्थ नहीं हो पाते हैं।

-डॉ. तुक्तक भानावत

स्मृतियों के शिखर (33) : डॉ. महेन्द्र भानावत

अनगड़ अखाड़ा के उस्ताद लादूराम

राजस्थान में प्रचलित रहे गायकी के अखाड़ों का लोकरंगमंच के विकास और उसको समृद्धिपूर्ण बनाने में बड़ा योगदान रहा है। यहां के लोकमंच की बात करते ही हमारे सामने भारतीय लोकमंच की वे सारी परम्पराशील नाट्य विधाएं दृष्टि केंद्र बन जाती हैं जो विविध प्रांतों एवं अंचलों में अपने वैविध्य और वैशिष्ट्य के कारण जानी जाती हैं।

यहां के लोकनाट्य ख्याल के जो विविध रूप मिलते हैं उनके मूल में अखाड़ों और उनके उस्तादों की परम्परा रही है। यह परंपरा अन्यत्र भी देखने को मिलती है। इस परंपरा में तुर्रा, कलंगी, अनगड़, इश्क, छत्र मुकुट, डूंडा, हूंडा, सेहरा, तोड़ा, शिवशक्ति तथा ब्रह्म नामक अखाड़े मुख्य हैं। इनमें तुर्रा, कलंगी, अनगड़, इश्क तथा शिवशक्ति नामक अखाड़ों के प्रचलन का श्रेय चित्तौड़ क्षेत्र को ही है। इन अखाड़ों के संचालकों के सान्निध्य में विविध रागों-रंगतों में धूणी पर गाने-बजाने का कार्य होता। अखाड़े और उस्ताद से लगाव रखनेवाले प्रेमीजन इसमें भाग लेते। अन्यों के लिए प्रदर्शन का इनका कोई लक्ष्य नहीं था। अपने मन की मौज तक ही यह कार्य सीमित रहता।

धीरे-धीरे बैठक के इस गाने ने जोर पकड़ा जिसने एक प्रकार से बैठकी स्वरूप धारण किया। यह बैठक दो दलों की आमने-सामने रहती। इसमें छंद बद्ध सवाल-जवाब होता। यह दो रूप लिए होता। एक में हार-जीत की बाजी रहती तो दूसरे में प्रेम-भाव की। पहला रूप 'शर्तिया' कहलाता। इसमें हार-जीत की शर्त लगती जबकि दूसरा 'मिल्लत का गाना' यानी मेलजोल का गाना कहलाता। हार-जीत में जीतने वाला दल पराजित हुए दल का चंग आदि वाद्य, चोपड़े-खरड़े ले लेता। यही नहीं, विजयी दल के सम्मुख या उससे भविष्य में शास्त्रार्थ नहीं करने की प्रतिज्ञा लेता और मजमे में खड़ा होकर सबके सामने अपनी हार स्वीकार करता। चित्तौड़ के तुर्रा, कलंगी ख्यालों का पूर्व रूप ये ही बैठकी ख्याल थे। सर्व प्रथम चैनराम ने ही तुर्रा ख्याल को मंचीय रूप दिया। उन्होंने अपनी एक मंडली बनाई और जगह-जगह ख्यालों का प्रदर्शन शुरू किया।

अखाड़े का प्रारंभ सर्व प्रथम सुहेडुसिंह ने किया जो तुर्रा के नाम से जाना गया। उसके बाद क्रमश: रूपचंद, छोटूलाल, खेमचंद, चम्पालाल, मूलचंद, ख्यालीलाल, गब्बूलाल, भवानीशंकर, हरिशंकर, रामसुखलाल तथा चैनराम हुए। चैनराम न केवल उस्ताद थे अपितु सधे हुए आशु रचनाकार भी थे। मैंने इनको लोकप्रियता के चरम पर देखा और इनकी सहायता से तुर्रा कलंगी पर पुस्तक भी लिखी। वे 29 दिसम्बर 1979 को काल कवलित हुए।

शिवशक्ति नामक अखाड़ा कनेरा मे था जिसके संचालक मोतीपुरी थे। घोसुंडा में कलंगी अखाड़े का बड़ा जोर रहा। इसका प्रारंभ हमीदबेग ने किया। उसके बाद क्रमश: ख्वाजा अली, मिर्जा हसन बेग और मिर्जा खाजू बेग उस्ताद हुए। मैंने तुर्रा के चैनराम और कलंगी के खाजू बेग के ख्यालों के प्रदर्शन देखे और कई बार उनसे भेंट कर राजस्थान के तुर्रा कलंगी नामक पुस्तक लिखी जो सन् 1968 में प्रकाशित हुई। घोसुंडा में ही भाट कलाकार इश्क नामक अखाड़े का संचालन करते थे। ये मुसलमान फकीर थे जो हाथ में डंडा रखते तथा लोहे की कड़ियां पहन खनखनाते थे। पोशाक में ये काला जब्बा और काली ही तहमद पहनते थे।

इन्हीं दिनों, सन् 1958 में, चित्तौड़ के लादूराम तोषनीवाल ने अनगड़ अखाड़े का शुभारंभ कर वहां के गांधीचौक में पहलीबार ख्याल मंचित किया। इसके लिए किशनगढ़ में कुचामणी ख्याल का प्रदर्शन देख उसमें जनाना बननेवाले छोट्यार (छोटू), उसके भाई मदन तथा उनके साथी कनौज के बंशीगीर को बुलाया और हनुमान स्थल पर डेरा डाला। वादकों में ढोलक पर नीमच का गुलाम अली तथा अठाणे का शहनाईवादक था। दो माह तक ख्याल प्रदर्शन का प्रशिक्षण दिया गया। जगह-जगह खेल प्रदर्शन के परचे बांटे गये। यह प्रचार उसी तरह के जोरशोर का था जैसा तुर्रा-कलंगी वाले किया करते थे।

उदयपुर में अपने निवास पर 17 नवंबर 2010 को तोषनीवाल से बातचीत कर अनगड़ अखाड़े के संबंध में विस्तार से जाना गया। जब वे बड़ौदा में थे तब वे गेबीनाथ नामक साधु के संपर्क में आए जो अनगड़ अखाड़े के उस्ताद थे। वहां नियमित रूप से चंगबाजी होती रहती।

कुछ शौकिया लोग भी आते। तोषनीवाल ने भी वहां आना-जाना शुरू कर दिया तो उनके दिल पर भी वह रंग चढ़ गया। गेबीनाथ के वहां गांजा और भांग की सेवा चलती रहती। दोनों के सेवन से सरस्वती का अवतरण होता और गाना बजाना शुरू होता। गांजा राजा रूप है तथा भांग रानी रूप। दोनों के मिलाप से ब्रह्म जग जाता और सूरता बैठ जाती। गांजा खंडवा से आता जो बालोतरी गांजा कहलाता। यह एक आना तोले में मिलता। यह बात सन् 1952-53 की है।

रात्रि को आसन क्रिया होती। गेबीनाथ सौलह-सौलह घंटे की आसन-बैठक करते। श्वांस खींचकर आसनमय बने रहते। नाभि से क्रिया चढ़ती जो एक लगन एक सूरत होती हुई आखिरी नवें ब्रह्मांड तक पहुंचती। कभी-कभी अपना फोटू अपने सामने रख 'तू मेरे में, मैं तेरे में' का घंटों उच्चारण करते। आसन पर बैठते वक्त भगवा जब्बा, लूंगी, बंडी पहनी जाती। सिर पर भगवा कपड़ा बांध लिया जाता। इससे भगवत्व की प्राप्ति होती है। तोषनीवाल भी इस प्रकार की बहुत सी क्रियाएं जानते हैं जो तब से लगातार करते आ रहे हैं और इस उम्र में भी स्वस्थ बने हुए हैं।

चित्तौड़ में तोषनीवाल का जन्म संवत् 1983 फाल्गुन सुदी 3, सोमवार को हुआ। उन्होंने शेर, दौड़, मिलाप, अलख, सखी दौड़, उड़ान, झूल, झोला, गाड़ी आदि विविध छंदों में अनगड़ विषयक विपुल साहित्य लिखा। 'अनगड़ तत्व विचार संग्रह' में उन्होंने अनगड़ के महत्व को कई रूपों में स्थापित कर अन्य अखाड़ेवालों की खूब खबर ली है, उन्हें बुरा-भला कहा है और नीचा दिखाकर घुड़की तक पिलाई है। यथा-

(अ) सबके घट-घट में गावे-बजावे अनगड़
कई गान-तान से गावे-नचावे अनगड़
तुर्रे का दार पे जा लटकावे अनगड़
निरंकार किसकी नजर न आवे अनगड़ (पृ. 13)

(ब) परिब्रह्म अविनाशी अनगड़, जप ले अजापा जाप।
पहले शोधन करले पिंड की, दिल के धोले पाप॥
ध्यान से दिल का पड़दा टटोल।
नुगरे तू दिल की गुंडी खोल।
गुन को ज्ञान तराजू तोल॥ (पृ. 20)

(स) माया को शिव दर्शन पी गये, शिव दर्शन को निराकारा।
घड़ा घाट सब हुआ बराबर, एक रहा अनगड़ न्यारा॥
अंधकार धुंधकार रहता, फिर नहीं उजाला अंधियारा।
नो गुण सुन्न में सुन अनगड़ ने, कही जुग लग आसन भारा॥
करो भाई इसका निस्तारा, किसे गाते तुम पता कहो सारा।
डूंडा खूंडा कहां रहा बिचारा, तुर्रा कलंगी पाखंड तुम्हारा॥
गेबीनाथ सद्गुरु है लेहरी, जबा बंद सब करदी तेरी।
लादूराम से दबते बेरी, क्यों करता बकवाद घनेरी॥ (पृ. 60-61)

सच तो यह है कि इस प्रकार के अखाड़ों में बैठक ही अधिक मंडती और विविध विषयों पर रचनाएं कर उस्ताद अपनी काव्यशक्ति का परिचय देते। प्रारंभ में जहां भी दो अखाड़ेबाज मिल जाते, आपसी सौहार्द से मैत्रीभावपरक गायनमंडली जोड़ते लेकिन यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रही। हर अखाड़ेबाज अपना महत्व और प्रभुत्व दिखाने लग जाता जिससे ईर्ष्याभाव ही अधिक पनपता।

तोषनीवाल ने गेबीनाथ को गुरु बनाकर उनसे बहुत सारी विद्याएं और कलाएं सीखीं। आशुकवि के रूप में वे चंग पर जब गाने को उतर पड़ते हैं तो अच्छों-अच्छों को मात देने लगते हैं। सन् 1994 में वे अपने एक मित्र के साथ इलाहाबाद गये। वहां उनके पास इतना पैसा भी नहीं बचा कि ठीक से भोजन भी कर सके। यह सोच वे एक अखाड़े में चले गये जहां कुछ साधुगण भजन गाने में मस्त थे।

तोषनीवाल ने वहीं उनसे चंग लेकर गाना शुरू किया। उनके दूसरे साथी ने वहीं एक चादर फैलादी। उनके गाने को सुन काफी लोग जमा हो गये और उस चादर पर इतने पैसों की निछरावल होगई कि बड़े मौज से दोनों इलाहाबाद कुछ और दिन रह सके।

उस साधु के पास उन्होंने ब्रज शखुन तुर्रा नामक एक पुस्तक भी देखी। वह तुर्रा अखाड़े का था जो उनसे बड़ा प्रभावित होकर उनकी अच्छी खातिरदारी कर सका। ऋषिकेश में भी तोषनीवाल ने साधुवेश में तीन वर्ष व्यतीत किये। वे सिंगोली चारभुजा भी रहे।

-शेष पृष्ठ सात पर

कर्मशीला कमलाजी स्मृति ग्रंथ का विमोचन

उदयपुर। समाज में वे ही व्यक्ति वरेण्य बनते हैं जो साधारण एवं सामान्य परिस्थितियों से निरंतर आगे बढ़ते हुए अपनी पहचान बनाते हैं। श्रीमती कमलाकुमारी पीतलिया उन्हीं महिलाओं में से एक थी जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व की विशेष छाप छोड़ी।

यह विचार प्रसिद्ध लोककला-संस्कृतिविज्ञ डॉ. महेंद्र भानावत ने व्यक्त किए। वे भीण्डर में रविवार को आयोजित 'कर्मशीला कमलाजी' नामक स्मृति ग्रंथ के विमोचन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। समारोह में मेवाड़ के विविध क्षेत्रों के अलावा अहमदाबाद, इंदौर, मैसूर तथा बेंगलूरू के सैंकड़ों श्रावक उपस्थित रहे।

समारोह के अध्यक्ष समाजसेवी एडवोकेट फतहलाल नागौरी ने कहा कि कमलाकुमारी पीतलिया ने अपने विशिष्ट गुणों से पीहर और ससुराल दोनों परिवारों को यश मंडित किया। विशिष्ट अतिथि शिक्षा भूषण सोहनलाल धींग ने स्मृति ग्रंथ के संपादक डॉ. भानावत के साहित्यिक योगदान को रेखांकित करते हुए बताया कि कमलाजी के व्यक्तित्व से यह प्रेरणा मिलती है कि हर महिला अपने सुसंस्कारों तथा कर्मशील पुरुषार्थ के बल पर आदर्श की सुपथगामिनी बन सकती है।

इस अवसर पर भीण्डर समाज के वरिष्ठनों मदनलाल नंदावत, रतनलाल बया, प्रकाश बया, प्रकाश कुदाल, ओमप्रकाश नंदावत, नाथूलाल दक, चांदमल सामोता, श्यामलाल बया ने कमलाजी के पति मदनलाल पीतलिया का वहां के श्रेष्ठ जामाता के रूप में बहुमान-सम्मान किया।

समारोह में आयोजक विमलकुमार, महावीरकुमार पीतलिया ने शिक्षा, समाज, धर्म, संस्कृति, राजनीति तथा वाणिज्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान स्वरूप मदनलाल नंदावत, प्रतापसिंह भाणावत, रूपलाल नंदावत, शांतिचंद्र बाबेल, करणसिंह कोठारी, फतहलाल मेहता, नानालाल पीतलिया, प्रकाश बया, मिट्ठूलाल नागोरी, डॉ. महेंद्र भानावत, सोहनलाल धींग, रतनलाल पीतलिया, हस्तीमल कोठारी, शांतिलाल कोठारी, फतहलाल नागोरी का सम्मान किया।

किरण कुमार नागौरी ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए कहा कि कमलाजी बचपन से ही हम सबके लिए स्नेहशीला रहीं। उन्हीं की वजह से नवरतन तथा अनिल नागौरी ने आद्योपांत पढ़ाई की। अपनी पांचों बहिनों के प्रति भी उनका सदैव स्नेहिल सत्कार रहा।

प्रारंभ में सरिता, चेतना, मधु, भावना, रंजना, उर्मिला, माला तथा रुचि ने मंगल गीतिका का मधुर गान किया। संयोजन शिक्षक नेता प्रकाश बया ने किया। ग्रंथ नायिका कमलाजी का जन्म 10 अक्टूबर, 1964 को भीण्डर तथा निधन उदयपुर में 4 सितम्बर, 2014 को हुआ। अपने जीवन काल में उन्होंने कई छात्रों को विद्याध्ययन के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की। जरूरतमंद रोगियों का उपचार करवाया। उद्यमी बनाने के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की व बिना ब्याज राशि प्रदान कर व्यवसायी बनाया।

कर्मशीला कमलाजी ग्रंथ परिचय

डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा संपादित कर्मशीला कमलाजी आर्ट पेपर पर बहुरंगी छपाई और पक्की जिल्द लिए दो सौ पृष्ठीय यह स्मृति ग्रंथ गोकुल भवन 117- भूपालपुरा मेनरोड़, उदयपुर से प्रकाशित है। ग्रंथ 6 खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में प्रमुख आचार्य, राजनेताओं तथा समाजसेवियों के मंगल सदेश तथा संवेदनाएं हैं। द्वितीय खण्ड में पीतलिया वंश का परिचय, कमलाजी के श्वसुर गोकुलचन्दजी के व्यक्तित्व तथा संथारा विषयक जानकारी है। कमलाकुमारी का वह आलेख भी है जो उन्होंने धर्मपिता श्वसुर पर लिखा।

तीसरे खण्ड में कमलाजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न विद्वानों, समाजसेवियों, पीतलिया-परिवार के परिजनों तथा उनसे सम्पर्कित लोगों द्वारा लिखे 43 संस्मरणजीवी आलेख हैं। कमलाजी के कीर्तिमान नामक खंड में 14 लेख हैं जो उनके धर्मजीवी, सद्गृहिणी, वैवाहिक जीवन तथा तपस्वी जीवन का बखान करते हैं।

कमलाजी का पीहर परिदृश्य नामक खंड में ग्रंथनायिका के पीहरपक्ष नागौरी परिवार के सदस्यों द्वारा लिखित आठ आलेख हैं जिनमें किरण नागोरी का लिखा नागोरी वंश वृक्ष, एडवोकेट फतहलाल नागोरी द्वारा लिखित पूर्णत: संस्कारी थी मेरी भतीजी, तेजादेवी द्वारा लिखित श्रेष्ठ श्राविका ननद बाईसा तथा नवरत्न नागोरी का लिखा उनका बाबू कह बुलाना शीर्षक आलेख उल्लेखनीय हैं।

अंतिम खंड नित्य स्मरण प्रात: नमन में कमलाजी द्वारा प्रतिदिन स्मरणीय भक्तामर, चौबीसी तीर्थंकर, सामायिक पाठ, पच्चीस बोल, स्तुतियां, वंदना, नवतत्व, थोकड़ा, 108 हिदायतें, अनमोल बोल, बोध कथाएं आदि का प्रभावी संकलन है। ग्रंथ में कमलाजी के पति मदनजी पीतलिया के लिखे दो आलेख, 'अभाव और संघर्ष के बीच कमला जैसी लक्ष्मी' तथा 'गृहस्थ साध्वी कमला' के अलावा डॉ. कविता मेहता लिखित 'मौसी सबकी मासी' डॉ. कहानी भानावत का लिखा ममता जैसी मौसी, सरिता कोठारी का लिखा मेरे में पूरी मेरी मां, विमल पीतलिया का लिखा सभी जन्मों में वे ही मां हो, सूरजदेवी पीतलिया का लिखा, टमा नाम मैंने रखा, सुनीता बैंगानी का लिखा ज्ञानशाला की आराधिका तथा साध्वी यशोधराजी की लिखी गीतिका तप से पग-पग जय-जयकार आलेख बड़े ही भावपूर्ण तथा आत्मीय संसर्ग लिए हैं।

-डॉ. कविता मेहता

रेजोनेंस का भव्य प्रतिभा सम्मान समारोह 'विक्ट्री-2017'

शिक्षा को संस्कार से जोड़ना अति आवश्यक : कटारिया

उदयपुर। आज की शिक्षा में बहुत प्रतिस्पर्धा है। रेजोनेंस जैसी संस्थाओं में पढ़कर छात्र बहुत उच्च स्तर पर लगातार आगे बढ़ रहे हैं, सफलता के नए कीर्ति शिखर छू रहे हैं। हमारा ध्येय बच्चों को शिक्षा के साथ ही संस्कार से जोड़ने का होना चाहिए। केवल शिक्षा ही देश का भला नहीं कर सकती। यह संस्कार से नहीं जुड़ी है तो केवल वेतनभोगी इंसान बनाएंगी। आज देश को योग्यता, बुद्धि एवं कौशल का उपयोग करते हुए हमेशा अपने से पिछड़ों को साथ लेकर चलने वाले नागरिक बनाने की जरूरत है। यह विचार गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने आरसीए सभागार में रेजोनेंस संस्थान की ओर आयोजित भव्य प्रतिभा सम्मान समारोह 'विक्ट्री-2017' में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए।

समारोह में जेईई एडवांस में सफल रहे 101 छात्रों, जेईई मेन्स में 181 तथा नीट में सफल रहे उदयपुर केंद्र के 44 विद्यार्थियों तथा एनटीएसई, नीट, एसटीएसई, आईजेएसओ, आईईएसओ में परचम लहराने वाले विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। जेईई एडवांस के उदयपुर टॉपर अर्पित मेनारिया को अतिथियों ने 4 लाख और जेईई मेन्स में 360 में से 360 अंक प्राप्त करने वाले उदयपुर के कल्पित वीरवाल को 9 लाख रुपए का चेक प्रदान कर विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

इससे पूर्व उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, पार्षद सुशील जैन, राकेश पोरवाल, उदयपुर सेंटर मैनेजर रजोनेंस अरूण श्रीमाली, द स्टडी के प्रिंसिपल डी के गुप्ता, सेंट एंथनी के प्रिंसिपल विलियम डिसूजा, जीडी गोयनका स्कूल के एमडी अनिल शाह, एमडीएस स्कूल के निदेशक डॉ. शैलेंद्र सोमानी, एवन स्कूल के प्रिंसिपल मनोहरलाल चांगवाल का सम्मान किया गया। गणपति वंदना फाल्गुनी भाटिया ने की जबकि संचालन गोपाल सोनी ने किया। इस बार रेजोनेंस के 6231 छात्रों का विभिन्न परीक्षाओं में चयन हुआ है।

रेजोनेंस के प्रबंध निदेशक आर के वर्मा ने सभी प्रमुख परीक्षाओं में संस्थान की शानदार उपलब्धियों को सिलसिलेवार बताते हुए कहा कि सफलता का श्रेय बच्चों, अभिभावकों व गुरुजनों की कड़ी मेहनता का ही प्रतिफल है।

डॉ. दिलीप धींग को 'राष्ट्ररत्न पुरस्कार'

अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र चैन्नई के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को 'डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम राष्ट्ररत्न पुरस्कार-2016' से सम्मानित किया गया। पद्मश्री डॉ. मणिभाई देसाई मानव सेवा न्यास, उरुली कांचन, पुणे द्वारा उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया। न्यास के अध्यक्ष डॉ. रवीन्द्र भोले तथा उपाध्यक्ष डॉ. अशोक पाटिल ने बताया कि डॉ. धींग को यह सम्मान उनके शोध व चिंतनपरक लेखन द्वारा अहिंसक मूल्यों के संवर्द्धन हेतु प्रदान किया गया। समारोह में अणुव्रत-सेवी डॉ. ललिता जोगड़ ने डॉ. धींग की उपलब्धियों को रेखांकित किया।

दिनेश रावत को 'हिन्दी भाषा रत्न सम्मान'

हिन्दी साहित्य क्षेत्र में सक्रिय युवा लेखक व कवि दिनेश रावत को आर. एस. डी. एकेडमी मुरादाबाद में आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मान समारोह 2017' में कैलिफोर्निया (अमेरिका) से आए कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. वेदप्रकाश वटुक, मुख्य अतिथि उत्तरप्रदेश विधान परिषद के सदस्य डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त तथा आयोजक डॉ. रामवीर सिंह 'वीर' के हाथों देश-विदेश से पहुँचे विभिन्न साहित्य साधकों की गरिमामय उपस्थिति में 'हिन्दी भाषा रत्न' सम्मान से सम्मानित किया गया।

राजस्थानी कहानी प्रतियोगिता

डॉ. नृसिंह राजपुरोहित स्मृति कोष द्वारा राजस्थानी कहानी प्रतियोगिता के आयोजन में मौलिक एवं अप्रकाशित कहानी आमंत्रित है। प्रथम पुरस्कार 5100, दूसरा 2100 तथा तीसरा 1100 का है। कहानी भेजने की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2017 है। रचनाएं ई मेल drnrskosh@ gmail.com पर या फिर सी-2, रतन-स्मृति, पंचवटी कॉलोनी, जोधपुर (राजस्थान)-342001 पते पर भिजवाई जा सकती है। अधिक जानकारी के लिए डॉ. आईदानसिंह भाटी 09414325867 या जेठनाथ गोस्वामी 09828926826 से सम्पर्क किया जा सकता है।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 जुलाई 2017

सम्पादकीय

शोध की गुणवत्ता में बोध की कमी

अब इसमें कोई संशय नहीं रहा कि देश के विश्वविद्यालयों में जो शोधकार्य हो रहा है उसमें बड़ी नकल देखी जा रही है। शोधकार्य में जो शुद्धता, गुणवत्ता होनी चाहिये वह खरी नहीं उतर रही है। उसमें मिलावट, भेलमेल घर करती जा रही है। और इसका अंश बढ़ता जा रहा है।

इस बात को लिखते मुझे एक दूध बेचने वाले का कथन याद आ रहा है। दूध में मिलावट की बात चलने पर उसने कहा था, बाबूजी आटे में नमक जितना पानी तो मिलाना ही पड़ता है। यदि वह भी नहीं मिलायें तो मेवेशी के थन जलने लग जाते हैं। यह बात बहुत पहले की है। उसके बाद तो एक घटना यह सुनने को मिली कि दूध वाले ने एक घर में देखा कि घरधनी दूध नहीं पीकर चाय पीता है सो उसने धीरे-धीरे दूध में इतना पानी मिलाना शुरू कर दिया कि चाय के लिए अलग से पानी मिलाने की जरूरत ही नहीं रही।

ऐसी घटनाएं हास्यास्पद ही नहीं, बड़े गंभीर सोच की हैं। इसके लिए शोध छात्र ही नहीं, शोध कराने वाले भी कम दोषी नहीं हैं। कई बार शोध का विषय कुछ होता है और सिनोप्सिस कुछ और बनी होती है। एक शोधकर्ता ने इतनी होशियारी की कि दूसरे की लिखी, डिग्री मिली पूरी थीसिस ही टाईप कराकर सबमीट कर पीएच.डी. ले ली और नौकारी पाकर सेवानिवृत्त हो गये।

जब ऐसी घटनाएं सुनने को मिल रही हैं तो लगता है हमारे शोध कार्यों का ऐसा हश्र हमें कितनी शर्मिन्दगी में ले जा रहा है। ऐसा भी होता है जब दो परीक्षकों की रिपोर्ट में ही आकाश-पाताल का अन्तर होता है। ऐसी स्थिति में शोधार्थी का क्या हो। बहुत सारे शोध प्रबंध तो ऐसे भी होते हैं जो डिग्री तो दिला देते हैं पर छपने योग्य नहीं होते।

इन सारी स्थितियों के बीच, ऐसा नहीं कि अच्छे शोधप्रबंध तैयार नहीं हो रहे हैं पर उनकी संख्या बहुत कम है। ऐसे परीक्षक भी हैं जिन्होंने जरा सी गलती में भी संशोधन कर पुन: थीसिस सबमीट करने को कहा। फुटनोट में गलती होने पर सुधारकर पुन: दिखाने को कहा। ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने ऊपर के प्रेशर को नहीं मानते अपने परीक्षक को ही विड्रो कर लिया पर समझौता नहीं किया। अधूरे फुटनोट पर भी आपत्ति की गई। ऐसा भी हुआ जब परीक्षक ने बारीक गलती पकड़ते कहा कि फुटनोट गलत दिया गया है। क्या शोधार्थी ने वह पुस्तक देखी है। इस पर शोधार्थी सकपका गया कारण कि उसने वह पुस्तक ही नहीं देखी। इस पर वह थीसिस मान्य नहीं हुई।

वर्तनी की अशुद्धियां तो ढेरों मिलती हैं। आलम यह भी है कि हिन्दी का छात्र शुद्ध हिन्दी नहीं लिख सकता। कहा जाता है कि पहले की तरह अब व्याकरण की, वैसे शब्द-उच्चारण की, बोर्ड पर लिखने की, राइटिंग जमाने की शिक्षा नहीं रही तब यही याद आता है- 'राम ई की चिड़िया, राम ई का खेत / खावो री चिड़िया भर-भर पेट।'

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' के 15 मई के अंक में लोक संस्कृति की विरासत, तफरी का लेखन नहीं, लोकावलोकन, भारतीय संविधान और राष्ट्रभाषा की चाहत और सम्पादकीय-उद्घाटन की प्रतीक्षा में खंडहर होते के अलावा दो दिन बालकवि बैरागी के साथ उत्कृष्टतम रचनाएं हैं। यह पत्र अपना दायित्व पूर्ण निष्ठा के साथ निभा रहा है इसीलिए पठनीय प्रेरक और सराहनीय बना हुआ है।

- दीनदयाल ओझा, जैसलमेर

'शब्द रंजन' मैं बराबर पढ़ रहा हूं। इसमें प्रकाशित हर रचना कुछ-न-कुछ नया जानने, समझने, सोचने तथा लिखने को प्रेरित करती है। यह सीख भी मिलती है कि खोज की पगडंडियां निरन्तर बे-रूके बढ़ती जा रही हैं। उनका रूकना जैसे जीवन-सृष्टि का अवरुद्ध होना है। मोर के सम्बंध में जो जानकारी मिली वह आँख खोलनेवाली तथा ज्ञान-संपदा बढ़ाने वाली है। **- भैरूसिंह राव, कानोड़**

'शब्द रंजन' की रचनाएं कई तरह की वह जानकारी देती हैं जिनसे हम अब तक अछूते रहे। छोटी-छोटी बातों में अद्भुत खजाना आप ही खोज लाते हैं। मोर के संबंध में जानकारी प्राप्त कर लगा कि जिन चीजों को निरंतर हम अपने पास देखते रहे, उनके बारे में भी हम कितने अनजान हैं। ऐसी खोज अब कौन कर रहा है। कृषि-वैज्ञानिकों के लिए भी एक बड़ी चुनौती है। बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में बड़ी-बड़ी शोध तो कराई जाती है मगर ऐसी छोटी शोध पर हमारा ध्यान नहीं जाता। आपने मोर के संबंध में एक बड़ी गुंडी खोल दी है। इससे युगयुगीन मोर का महत्व स्वत: स्पष्ट होता हुआ कई खिड़कियां खोल देता है। सार्थक शोध ऐसी ही होती है। मोर भोग नहीं करता तो उसे कोई रोग भी नहीं लगता। ब्रह्मचर्य का महत्व तो सभी ने बताया ही है। मोर को लेकर आपने इतना कुछ बता दिया कि कोई पीएच.डी. के लिए विषय बना सकता है। बहुत-बहुत बधाई।

- एडवोकेट फतहलाल नागोरी, उदयपुर

गोवा की दर्शनीय हवाई यात्रा

19 से 22 जून को गोवा की यात्रा में शब्द रंजन परिवार से जुड़े क्रमशः युक्ता, जितेन्द्र मेहता, डॉ. कहानी भानावत, प्रतिक्षा, डॉ. कविता मेहता, काव्या तथा सलोनी।

'हृदय हमारी साख है, नहीं तो जीवन राख है'

हृदय रोग जागरूकता रैली में शहरवासियों ने दिखाया अपार उत्साह

उदयपुर। 'सेवा परमोधर्म ने ठाना है, हृदय रोगों को मिटाना है,फास्टफूड को दूर भगाओ, दिल को अपने स्वस्थ बनाओ, जीवन बनाना है खुशहाल, दिल

का हमेशा रखें खयाल, जल्दी सोना, जल्दी उठना, योग से दिल को स्वस्थ रखना, शुद्ध रखो अपना आहार, दिल धड़केगा लगातार, हृदय हमारी साख है, नहीं तो जीवन राख है, शुद्ध भोजन बिना तनाव, दिल पे कभी ना होगा घाव..।' ये नारे गूंज उठे शनिवार सुबह नगर निगम के प्रांगण में।

मौका था दिल की बीमारियों के प्रति आमजन को जागरूक करने और लोगों में स्वास्थ्य चेतना जगाने के लिए सेवा परमोधर्म ट्रस्ट की ओर से नारायण सेवा संस्थान द्वारा गीतांजली हॉस्पीटल उदयपुर, समाजसेवी कान हसोमल लखानी हांगकांग एवं हेव-अ-हार्ट बेंगलूरू के सहयोग से आयोजित विशाल हृदय रोग जागरूकता रैली का। सुबह 9 बजे आसमान में रंग-बिरंगे गुब्बारे उड़ाकर ऐतिहासिक रैली को पद्मश्री कैलाश मानव, महापौर चंद्रसिंह कोठारी, यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली, संस्थान अध्यक्ष डॉ. प्रशांत अग्रवाल, एमबी अस्पताल अधीक्षक डॉ. विनय जोशी, सनराईज़ ग्रुप के निदेशक हरीश राजानी, समाजसेवी भंवर सेठ, गीतांजलि समूह के प्रमोश्नल हेड अखिल दवे ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर महापौर चंद्रसिंह कोठारी ने कहा कि सेवा का यह जज्बा अद्भुत व अद्वितीय है। हम सबको इससे सीख लेकर अपने जीवन को धन्य करना चाहिए। यूआईटी चेयरमैन रवींद्र श्रीमाली ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान वर्षों से समाज सेवा का जो कार्य कर रही है वह वंदनीय, अनुकरणीय व अतुल्य है। पद्मश्री कैलाश मानव ने कहा कि हर दु:खी मन को सेवा भावना से प्रसन्न करना व उसकी पीड़ा हरना ही सच्ची मानवता है। मन में जज्बा होना चाहिए कि हम भी स्वस्थ्य रहेंगे व देश के हर नागरिक को स्वस्थ रहने का संदेश देंगे।

संस्थान अध्यक्ष डॉ. प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि सेवा परमोधर्म ट्रस्ट अब तक हृदय रोग सहित अन्य असाध्य रोगों से पीड़ित 4 हजार से अधिक मरीजों के ऑपरेशन करवा चुका है। हमारा एकमात्र लक्ष्य गरीब व सर्वहारा वर्ग के लोगों का नि:शुल्क उपचार करवाना है। उनके जीवन में खुशियां लौटेंगी तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा।

हृदय रोग जागरूकता रैली में 100 से अधिक ट्राइसिकल एवं व्हील चेयर पर दिव्यांग भाई-बहिनें, सैंकड़ों नर्सिंग विद्यार्थी सहित बड़ी संख्या में शामिल हुए शहरवासियों ने अपार जोश दिखाया। हरी झंडी दिखाते ही 'भारत माता की जय', 'वंदे मातरम' के जयघोष हुआ और सबने दिल की बीमारियों से बचाव, समय पर उपचार का संदेश दिया। बैण्ड की धुन पर मधुर स्वर लहरियों के बीच हुए उद्घोषों ने सफेद टीशर्ट में सजे प्रतिभागियों का खूब उत्साहवर्धन किया।

रैली सूरजपोल, बापू बाजार, देहलीगेट होते हुए पुन: नगर निगम प्रांगण पहुंची। रास्तेभर लोगों ने रैली में शामिल दिव्यांगजनों का उत्साहवर्धन किया। फोटो व सेल्फी लेने की होड़ मची। इस रैली में भाग लेने देशभर से लोग पहुंचे। ट्राइसिकल पर जोश के साथ आगे बढ़े दिव्यांगजनों ने कहा कि नियमित व संयमित जीवनशैली से हृदय रोगों से बचा जा सकता है। सेवा परमो धर्म ट्रस्ट ने गरीब तबके के मरीजों के निशुल्क उपचार का जो बीड़ा उठाया है, उसकी मिसाल दुनिया में कहीं भी देखने को नहीं मिलती।

पीआईएमएस हॉस्पिटल द्वारा डॉक्टर्स डे पर सन्देश रैली

उदयपुर। आम जनता को जेनेरिक दवाइयों के प्रभाव तथा उनके फायदे की जानकारी देने के लिए शनिवार को पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) हॉस्पिटल उमरड़ा के भावी चिकित्सकों द्वारा सन्देश रैली निकाली गई। रैली को साई तिरुपति यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार देवेंद्र जैन एवं कॉलेज डीन डॉ. के. के. शर्मा ने झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर पैसिफिक इंस्टीट्यूट के खेल अध्यक्ष राकेश पालीवाल, एचआर मैनेजर ललित चौधरी एवं जितेंद्र कटारिया भी उपस्थित थे। रैली प्रात: 7 बजे मोती मगरी प्रताप स्मारक से रवाना होकर फतहसागर पाल पर संपन्न हुई। पीआईएमएस के ऑपरेशन मैनेजर दीपक आचार्य ने बताया कि फार्माकोलॉजी डिपार्टमेंट के डॉक्टर इमरान ने सभी एमबीबीएस कर रहे 300 भावी डॉक्टर्स को जेनेरिक दवाइयों की गुणवत्ता एवं उसके प्रभाव के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान भ्रमण पर आने वाले सभी नागरिकों को जेनेरिक दवाइयों के प्रभाव तथा उनके फायदे की जानकारी देने वाले पैम्पलेट बांटे गए और जेनेरिक दवाइयों को लेकर लोगों में व्याप्त भ्रांतियों को दूर किया।

पोथीखाना

फूलों की घाटी में गद्यगीतों का पुष्प-गुच्छ

स्वाध्याय के साधक तथा सुधीजनों के संगम के रूप में सम्मान्य नथमलजी केड़िया पिछले सात दशक से सत्साहित्य के प्रणेता के रूप में लेखन-धनी बने हुए हैं। गद्यगीत लेखक

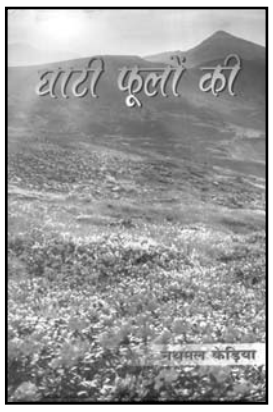

के रूप में उन्होंने सन् 1943 से ही अपनी पहचान प्रारंभ कर दी थी। यह वह काल था जब इस क्षेत्र में कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रायकृष्णदास, वियोगी हरि, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, रामकुमार वर्मा, सुदर्शन जैसे लेखक निरन्तर ख्याति का शीर्ष थामे हुए थे।

इधर मेवाड़ का उदयपुर भी उन दिनों गद्यगीत लेखन का उमड़ाव लिये था। दिनेशनंदिनी चोरड़िया, जनार्दनराय नागर तथा देवीलाल सामर एक-दूसरे की होड़ाहोड़ी में लेखन का प्रण लिये हुए थे। ये सब लोग गद्यगीतों के साथ कहानी तथा उपन्यास लेखन में भी सिद्धहस्त हुए। जनार्दनराय नागर अन्त तक गद्यगीतों की रचना में संलग्न रहे। अपने द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक जनमंगल के प्रत्येक अंक में उनका गद्यगीत पढ़ने को मिलता। उनके नहीं रहने के बाद भी जनमंगल में उनके गद्यगीत निरन्तर प्रकाशन में हैं।

देवीलाल सामर जब विद्याभवन में थे तब निरन्तर थे। बाद में भारतीय लोककला मण्डल नामक संस्था प्रारंभ कर वे लोककला, लोकसंस्कृति के व्यक्ति ही हो गये। सत्ताईस वर्ष बाद उन्होंने एकबार फिर इस लेखन को हुआ और एक छोटी सी पुस्तिका 'अन्तर्मन' नाम से मैंने ही मई 1967 में प्रकाशित कराई जिसमें उनके लिखे तेरह गद्यगीत संकलित हैं। 'अन्तर्मन' का उदय उनके गोदीले पुत्र गोविन्द की स्मृति के उत्पीड़न के रूप में हुआ। इसकी भूमिका के प्रारंभ में सामरजी ने गद्यगीत की प्रसविनी के बारे में लिखा- ''काव्य जब छन्द का बन्धन तोड़कर उन्मुक्त कहने का माध्यम ढूंढ़ता है तो गद्य अनायास ही उसका वाहक बन जाता है। अन्तर्मन के उद्वेग जब कोई समाधान नहीं पाते तो अनायास ही ऐसे तत्वों का आधार पकड़ लेते हैं जिनका विश्लेषण बुद्धि की ताकत से परे है।''

उत्कृष्ट लेखन का सृजन किसी उम्र का मोहताज नहीं होता। ऐसे साहित्यकार हुए हैं जिन्होंने कम उम्र में श्रेष्ठतम साहित्य का सृजन किया। केड़ियाजी के लिए भी यही सत्य उद्घाटित होता है। 'घाटी फूलों की' में संग्रहीत 56 गद्यगीत उसी काल के, बीसवीं सदी के पांचवें दशक के लिखित हैं जो आज भी उतने ही श्रेष्ठ रूप में चर्चित, प्रशंसित एवं गद्यगीतों की कसौटी पर कंचन देते कमनीय बने हुए हैं।

डॉ. बाबूलाल शर्मा ने पुस्तक के प्रारम्भ में 'गद्यकाव्य परम्परा में घाटी फूलों की' में लिखा - ''इन गद्यगीतों में सामान्यत: प्रेम को लेकर मूल्यपरक चेतना तथा उसके माधुर्य की उदात्तता एवं प्रकृति के कोमल स्पर्शों की अभिव्यंजना हुई है। प्रेम और प्रकृति के अलावा कई गीत सामाजिक, पारिवारिक, पौराणिक तथा ऐतिहासिक घटनाओं के संदर्भों को लेकर हैं तो कतिपय ऐसे गीत भी हैं जिनमें रोजमर्रा के जीवन संदर्भ हैं और ऐसे गीतों में वे जड़ वस्तुओं का मानवीकरण कर उन्हें संवेदनशील बना देते हैं।''

संक्षेप में केड़ियाजी के गद्यगीत कोरे गद्यगीत नहीं हैं। वे प्रकृति और पुरुष के सार्थक मेल-संजोग हैं तो अदृश्य शक्ति तक पहुंच बनाने वाले मुक्ति द्वार भी हैं। हमारे संवेगों और संवेदनाओं के संलिष्ट सुमेरु हैं तो उस विराट के वैभव के विपुल खजानों की टोह देने वाले भी हैं जिनसे मनुज निरन्तर कोई न कोई सीख, कोई न कोई समझ और असह्य पीड़ा से सहनशील बनने का सुख ग्रहण करता है साथ ही हमारे अन्तर्मन को झकझोर कर अन्तर्चक्षु का उजास पाने का उपक्रम बनता है। उदाहरणार्थ प्रस्तुत है यह गद्यगीत-

भक्त अमर

विश्वबंद्य गाँधी को गोली लगी और महाप्रयाण कर गये,
क्योंकि वे अवतारी थे।
महात्मा ईसा को शूली पर चढ़ाया गया और वे चले गये,
क्योंकि वे ईश्वर के पुत्र थे।
संत सुकरात को जहर पिलाया गया और वे दुनिया से कूच कर गये
क्योंकि वे ज्ञानी थे।
पर मरु-मन्दाकिनी मीराँ जहर पीकर भी अमर हो गयी
क्योंकि वह भक्त थी, समर्पिता थी।

शायद आज तक कोई गोली, शूली, कोई जहर ऐसा नहीं बना जो भक्त को मार सके।

देखने की बात यह है कि हमारे यहां जितना भी श्रेष्ठ लेखन किया गया उसका अधिकांश तो प्रकाश में ही नहीं आ पाया है। जितना साहित्य प्रकाश में आया उससे सैकड़ों गुना साहित्य या तो लेखक के जीवित रहते या फिर उसके निधन के बाद रद्दी से भी गई गुजरी स्थिति लिए क्षत-विक्षत हुआ है।

कमोबेश आज भी इस स्थिति में बदलाव नहीं आया है। ऐसे में केड़ियाजी जैसे सजग सचेष्ट तथा अपनी धरोहर के प्रति अपना लगाव रखने वाले चिन्तनशील सृजनधर्मी से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है कि समय रहते कोई ऐसा समझदार प्रयास किया जाना परम आवश्यक है कि हम अपने लेखन को संरक्षित दायित्व दे सकें। इस दृष्टि से 'घाटी फूलों की' पुस्तक हमारे लिए फूलों की घाटी का एक शतरंगी-सबरंगी पुष्प गुच्छ ही है।

कुल 84 पृष्ठों वाली यह सजिल्द पुस्तक 150 रूपये मूल्य लिए नथमल केड़िया, 4 ए, शंभुनाथ पंडित स्ट्रीट, कोलकाता-700020 से प्रकाशित है। **-म.भा.**

लोकनाट्यों की परंपराजनित प्रवृत्तियां

मेरे परमप्रिय साथी डॉ. महेन्द्र भानावत का यह ग्रंथ राजस्थान की लोकनाट्य विधाओं को अनुभवगत कराता है। मैं इसे केवलमात्र ग्रन्थ न कहकर इसे लोकनाट्य कोष कहूं तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पहलीबार ही राजस्थानी लोकनाट्यों का इस रूप में विवेचन हुआ है। मेरे साथ काम करते हुए उन्हें पन्द्रह वर्ष से भी अधिक हो गए। कई लोकनाट्यों को उन्होंने मेरी आंखों से देखा है। इसीलिए मैंने इस समस्त पुस्तक में परम आत्मीयता के दर्शन किए हैं। यह इस शैली की प्रथम पुस्तक है जो कलादृष्टि से लिखी गई है। इस विषय की कई पुस्तकें मेरी निगाह में आई हैं जिनमें एक अनुभवगत कलादृष्टि का अभाव पाया जाता है। उनमें विषयगत सामग्री, विवरण, विवेचन, विविध पुस्तकों के संदर्भ आदि तो अनेक मिलते हैं, परन्तु उनमें कला एवं रंगमंचीय स्वरूप का पता लगता है। लोकनाट्यों में नाट्य एवं कलातत्वों से कहीं अधिक लोक की आत्मा अंतर्हित रहती है और वही लेखक सफल समझा जाता है जो पाठकों एवं अध्येताओं को उस आत्मा से परिचित कराये। मैं डॉ. महेन्द्र भानावत के प्रति उनकी इस सफल रचना के लिए साधुवाद ही प्रकट नहीं करता बल्कि आभार भी प्रदर्शित करता हूं कि उन्होंने इस पुस्तक के माध्यम से मेरी अभिलाषाओं की पूर्ति की है। सन् 1971-72 में बापना प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर से प्रकाशित साढ़ा तीन सौ पृष्ठों के इस ग्रंथ का मूल्य 75 रूपया है।

- देवीलाल सामर

खोज-खबर

इडाणा माता का अग्नि स्नान

इडाणा माता का स्थान मेवाड़ के प्रमुख शक्तिपीठों में गिना जाता है। यह स्थल उदयपुर से 60 किलोमीटर दूर कुराबड़-बम्बोरा मार्ग पर स्थित है। यों तो यहां सभी जाति के लोग दूर-सुदूर से आते हैं किन्तु मुख्यत: यह राजपूतों, भीलों की आराध्या है। विविध प्रकार की मनौतियां पूर्ण होने पर यहां चढ़ावा चढ़ाया जाता है।

निसंतान दम्पत्ति पुत्र की प्राप्ति पर यहां पालना-झूला चढ़ाते हैं। लकवाग्रस्त रोगी अपना अंग-विशेष ठीक हो जाने पर काष्ठ अथवा चांदी निर्मित अंग-विशेष चढ़ाते हैं। महिलाएं मनौती पूर्ण होने पर चुनरी चढ़ाती हैं तो कोई त्रिशूल चढ़ाकर अपनी धारणा पार पाता है। ऐसे चढ़ावे में प्राप्त यहां अनेकों चुनरियां प्रतिमा के पीछे अगणित त्रिशूलें तथा धातु निर्मित मानव-अंगों का चढ़ावा देखते ही बनता है।

देवी इडाणा बड़े भव्य रूप में चमकती मुख-दर्शन लिये है। लकवाग्रस्त व्यक्ति को रात को चौक में सुलाया जाता है। मान्यता है कि देवी रात्रि को बाहर निकलती है और ऐसे रोगियों को स्पर्श कर उनका दुख-दर्द मेटती है। सुबह होने पर हलन-चलन करने में असमर्थ रोगी के हिलने-डुलने तथा बोलने में समर्थ पाने पर परिजनों का खुशी का उमड़ाव उल्लास अकल्पनीय आनन्द में चमत्कृत हुआ लगता है।

वर्ष में आने वाली दोनों नवरात्रा पर यहां श्रद्धालुओं की रेलमपेल कई गुना बढ़ जाती है। देवी की आराधना स्वरूप हर समय भजन-गान चलते रहते हैं। कहा जाता है कि माह में दो-तीन बार देवी स्वत: जागृत हो अग्नि स्नान करती है। नवरात्रा में अग्नि स्नान का दृश्य दांतों तले अंगुली दबाने वाला होता है। माता के दर्शन हर समय खुले रहते हैं। हर समय देवी जागृत हुई लगती है।

यहां भक्तों से मैंने जाना कि देवी रात को शेर की सवारी किये निकलती है। इनमें से एक भक्त ने बताया कि उसके पुरखों ने यहां रात को शेर देखा जिससे उसकी रूह कांप गई। ऐसे मेवाड़ में जितने भी शक्ति-स्थल हैं वहां प्रति रात्रि शेर आता है और देवी-दर्शन करता है। असली शेर केसरी शेर कहलाता है। इस तरह के शेर भी भक्त होते हैं जो किसी को हानि नहीं करते। देव-शेर और साधारण शेर में भेद करना मुश्किल है। कई बार केवल शेर ही नजर आता है। उस पर सवार देवी किसी को नजर नहीं आती। यों भी देवता वायु-रूप होते हैं जिन्हें सामान्य आंखें नहीं देख सकतीं।

एक साहित्यिक समारोह में 28 मई 2017 को जब बम्बोरा जाना हुआ तो सबसे पहले हमने इडाणा माता के दर्शन किये। इस बार माता तक पहुंचने की व्यवस्था लोह-रैलियों के सहारे सुव्यवस्थित लगी जो बिना किसी धक्कामुक्की के स्वत: रास्ता देती हुई देवी-दर्शन कराती है। वहां मैं किसी ऐसे व्यक्ति से मिलना चाहता था जिसने देवी को अग्नि स्नान करते देखा।

बड़ी मुश्किल से एक दुकानदार ने बताया कि अब कभीकभाक ही वह दृश्य देखने को मिलता है। देवी जहां स्थिर है वहां स्वत: अग्नि प्रज्वलित होकर उसके पीछे का अनेक त्रिशूलों वाला हिस्सा तथा भक्तों द्वारा चढ़ाई गई चुनरियों का अम्बार ज्वाला से ज्वाजल्यमान हो उठता है। देवी सहित देवी से जुड़ा आसपास का सम्पूर्ण हिस्सा ज्वालाओं की चपेट में बड़ी सुखद कान्तिमय अनुभूति देता है और देखते-देखते कुछ समय बाद सारा माहौल शान्त हो जाता है। इस ज्वाला-स्नान में किसी भक्त को कोई चोट लगी हो, कोई चपेट में आया हो, ऐसा कभी नहीं सुना गया और न देखा गया। इसी कारण ज्वाला देवी की मान्यता बहुत दूर-दूर तक फैली हुई है।

यूरोप की पारिवारिक यात्रा का रोमांच

भारत में आदिकाल से यात्रा का रंजन रहा है। यह यात्रा मुख्यत: तीर्थयात्रा की रही पर आजादी के बाद तीर्थों के अलावा देश-दुनिया-दर्शन की यात्रा के विविध उद्देश्य बने हैं। अब तो शादी के बाद हनीमून मनाने के लिए भी नव परिणित जोड़ा घर से बाहर दूर-सुदूर की यात्रा को आनंदित करना चाहता है।

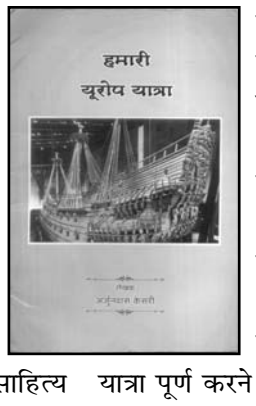

डॉ. अर्जुनदास केसरी साहित्य की विविध विधाओं के स्थापित लेखक हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'हमारी यूरोप यात्रा' उनकी निजी पारिवारिक यात्रा का दिग्दर्शन है। इस यात्रा में स्वयं लेखक और उनकी सहधर्मिणी पार्वतीदेवी प्रमुख यात्री हैं। उनका पुत्र डॉ. कवीन्द्रकुमार तथा पुत्रवधू संगीता फिनलैण्ड के कोपियो में रहते हैं अत: प्रमुख उद्देश्य तो उन्हीं से मिलने का था किन्तु उनके कारण उन्होंने यूरोप के अन्य देश स्वीडन तथा स्टानिया का भ्रमण भी कर लिया।

यह दुखद वियोग रहा कि यात्रा पूर्ण करने के चार माह में ही पार्वतीदेवी उन्हें छोड़ गोलोकवासी हो गईं अत: यह पुस्तक भी उन्हीं की स्मृति को भेंट की गई है।

कुल जमा 66 पृष्ठीय इस छोटी सी पुस्तक में लेखक ने यूरोप के फिनलैण्ड, स्वीडन तथा स्टानिया ; तीन देशों की भौगोलिक समझ, वहां के निवासियों की भाषा, जीवन-व्यवहार, खान-पान, रहन-सहन, प्रकृति, पर्यावरण, शिक्षा, उद्योग, स्वच्छता, बाजारों की रौनक, आपराधिक प्रवृत्ति, मुख्य-प्रमुख दर्शनीय स्थल, समुद्री यात्रा का रोमांच, संग्रहालय आदि का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है।

इस यात्रा में पाठकों की रूचि बांधने का लेखक का प्रयास अत्यंत सराहनीय है। लगता है जैसे पाठक भी लेखक-परिवार के साथ सहयात्री बना हुआ है। उन लोगों के लिए यह पुस्तक एक परिचायिका तथा दिग्दर्शिका भी है जो इन देशों की यात्रा करना चाहते हैं। लोकरुचि प्रकाशन, सोनभद्र-231216, उत्तरप्रदेश से प्रकाशित यह कृति सौ रूपये मोल की है।

- डॉ. कहानी भानावत

शहर की हलचल

शुद्धि द्वारा जरूरतमंदों को कपड़े, जूते वितरित

शुद्धि टीम, (शोर्यगढ़ रिसोर्ट एंड स्पा) द्वारा बड़ंगा, धार, धार खेड़ा तथा हवाला गांव में आर्थिक रूप से कमजोर

व जरूरतमंदों को कपड़े, जूते आदि वितरित किये। फाउण्डर रूपम सरकार, जनरल मैनेजर शोर्यगढ़ रिसोर्ट एंड स्पा ने बताया कि आज भी कई परिवार ऐसे हैं जिन्हें दो वक्त की रोटी, कपड़े, जूते भी नसीब नहीं होती है। ऐसे लोगों को सहायता पहुंचाने के उद्देश्य से शुद्धि नामक एक टीम गठित की गई है जो जरूरमंदों के बीच जाकर सामाजिक कार्यों के साथ-साथ उनकी जरूरतों की पूर्ति के लिए काम करती है।

इसके अलावा टीम द्वारा अंबामाता अंध विद्यालय में कराओके सेट प्रदान किया गया तथा शोर्यगढ़ सिरोर्ट एंड स्पा में बीस बच्चों तथा तीन अध्यापकों को भोजन कराया गया। साथ ही साथ एनिमल एड सोसायटी में पूरा दिन व्यतीत कर दवाइयां व खाना वितरित किया गया।

इस अवसर पर रूपम सरकार के साथ चिक्स कनेक्ट की फाउंडर हुर्रतुलमल्लिका ताज, उदयपुर ब्लॉग के फाउण्डर संजीत चौहान, प्रियदर्शनी, गीतांजलि, राजकुमारी, खुमान सिंह, प्रेम तेली, जितेन्द्र, पूरन, उमंग, करन, तेजा, महेन्द्र तथा जनार्दन भी मौजूद थे।

लाईफ, हर्ट/ कैंसर प्रोटेक्ट लांच

आईसीआईसीआई प्रूडेंशल लाईफ ने आईसीआईसीआई प्रू हर्ट/कैंसर प्रोटेक्ट लांच किया है। इस उत्पाद की अनूठी विशेषता यह है कि यह दिल की बीमारी या कैंसर के निदान हेतु ग्राहक को बीमा कवर राशि का कुछ हिस्सा भुगतान करता है जिससे ग्राहक को वित्तीय सहायता प्राप्त हो जाती है और चिकित्सा की स्थिति में उपलब्ध सबसे अच्छे इलाज का चयन करने की स्वतंत्रता मिलती है।

यहां तक कि जांच पर भुगतान के बाद ग्राहक द्वारा किसी भी प्रीमियम का भुगतान किए बिना पॉलीसी जारी रहेगी। ग्राहकों को कवर के प्रकार का चयन करने की सुविधा प्रदान की जाती है, या तो दिल या कैंसर के लिये दोनों कवर खरीदने का विकल्प उपलब्ध है।

कार्यकारी निदेशक पुनीत नंदा ने कहा कि यह एक एड-ऑन बेनिफिट जिसे आय प्रतिस्थापन कहा जाता है, जो ग्राहक को मासिक भुगतान के रूप में बीमा कवर का एक प्रतिशत प्रदान करता है। यह आय के किसी भी अस्थायी नुकसान की भरपाई करेगा, जिसका सामना एक व्यक्ति को चिकित्सा उपचार के दौरान करना पड़ सकता है। हर्ट/कैंसर प्रोटेक्ट ग्राहकों को प्रतिवर्ष कवर की राशि में वृद्धि के विकल्प का अवसर भी प्रदान करता है। इस सुविधा का उद्देश्य चिकित्सा इलाज की लागत के बढ़ने के साथ ग्राहक की मदद करना है। सिर्फ 100 रूपये प्रतिमाह की दर पर एक ग्राहक 20 लाख का कैंसर कवर या 10 लाख का एक हर्ट कवर प्राप्त कर सकता है।

उल्लेखनीय है कि दिल की बीमारी और कैंसर दोनों से लगभग 50 प्रतिशत से अधिक भारतीय ग्रसित हैं। मेडिकल शोध से पता चला है कि भारत में हृदय रोगियों की दर दुनियाभर में सबसे अधिक है और अनुमानित रूप से लगभग दो लाख हर्ट सर्जरी प्रतिवर्ष यहां सम्पन्न की जाती है। वर्ष 2020 तक कैंसर के मामलों में 25 प्रतिशत की वृद्धि की संभावना व्यक्त की जाती है। प्रत्येक 13वां कैंसर रोगी भारत से है।

वोडाफोन सुपरनाईट पैक लॉन्च

वोडाफोन ने अपने प्रीपेड उपभोक्ताओं के लिए एक नया प्रोडक्ट वोडाफोन सुपरनाईट पैक लॉन्च किया है। इसके द्वारा उपभोक्ता 19 जून से मात्र 29 रुपये में पांच घण्टों के लिए अनलिमिटेड 3जी-4जी डेटा और डाउनलोडिंग का लाभ उठा सकते हैं। इस पैक को दिन के किसी भी समय एक्टिवेट किया जा सकता है और यह पांच घण्टों के लिए रात 1 से सुबह 6 बजे तक वैद्य होगा। इसके अलावा उपभोक्ता वोडाफोन सुपरनाईट की अनलिमिटेड रीपीट परचेज़ के साथ हर रात को सुपरनाईट बना सकते हैं और मात्र 6 रुपये प्रति घण्टा में डेटा का लुत्फ़ उठा सकते हैं।

वोडाफोन इण्डिया में चीफ़ कॉमर्शियल ऑफिसर संदीप कटारिया ने कहा कि इन सुपरनाईट पैक्स के साथ उपभोक्ता जितना चाहे डेटा डाउनलोड कर सकते हैं और पांच घण्टों के लिए मामूली सी कीमत पर अनलिमिटेड डेटा का लाभ उठा सकते हैं। सुपरनाईट के इस अनलिमिटेड डेटा ऑफर का इस्तेमाल वोडाफोन प्ले से विभिन्न प्रकार के कंटेन्ट की ब्राउज़िंग और डाउनलोडिंग के लिए किया जा सकता है। वोडाफोन आपकी अपनी अनूठी मनोरंजन की दुनिया है जो 150 से ज़्यादा लाईव टीवी चैनल, 14000 से ज़्यादा मुवीज़ और टीवी शो टाइटल एवं म्युज़िक की व्यापक रेंज प्रस्तुत करती है।

टेक्नो मोबाइल के मार्केटिंग अभियान की शुरूआत

ट्रैनसन होल्डिंग्स की एक इकाई, टेक्नो मोबाइल ने अपनी मेड फार इंडिया आई सीरिज़ के साथ भारतीय बाज़ार में प्रवेश किया। कम्पनी ने अब राजस्थान के उपभोक्ताओं के लिए अपने पहले मार्केटिंग अभियान की शुरूआत की है। टेक्नो के सबसे स्मार्ट नाइटफोन अनूठी इमेज प्रोसेसिंग प्रौद्योगिकी पिक्सएलेक्स इंजन के साथ का वादा करते हैं। ये इमेज प्रौद्योगिकी व उपयोक्ता अनुभव की सीमाओं को पुनर्परिभाषित करके काली घनी रातों में चमकदार तस्वीरें लेने में उपभोक्ताओं को सक्षम बनाती है।

उपभोक्ताओं से संवाद करने के लिए, टेक्नो मोबाइल सबसे स्मार्ट नाइट फोन्स के साथ की अपनी ब्रांड स्थिति के अनुरूप नाइट सेल्फी की जांच करने के लिए लाइव बूथ भी लगाएगा। रात के समय बेहतर नाइट फोटोग्राफी के अलावा, आई सीरिज' एंटी-ऑयल फिंगर प्रिंट सेंसर सहित अभिनव विशेषताएं फोन का बाधारहित उपयोग करने की सुविधा प्रदान करती है। यह बैटरी रॉकेट चार्जिंग से लैस हैं जो आपको पारम्परिक फास्ट चार्जिंग की तुलना में 20 प्रतिशत कम समय में फोन चार्जिंग की सुविधा प्रदान करती है।

राजस्थान के उपभोक्ताओं का मनोबल बढ़ाने के लिए, टेक्नो स्मार्टफोन '151' प्रॉमिस के साथ आ रहे हैं जो 100 दिनों की वापसी, 50 प्रतिशत बाईबैक व 1-वर्ष की वन-टाइम स्क्रीन रिप्लेसमेंट की सुविधा सीमित अवधि के लिए प्रदान करता है। टेक्नो मोबाइल राजस्थान में 2500 से अधिक रिटेल प्वाइंट्स पर उपलब्ध हैं। इसकी उत्पाद सूची में पांच मॉडल - आई-3, आई-3 प्रो, आई-5, आई-5 प्रो, व आई-7 उपलब्ध हैं जो 7,990 रू. से 14,990 रू. की प्रतिस्पर्धी कीमत में उपलब्ध हैं। ये नए उत्पाद शैम्पेन गोल्ड, स्काई ब्लैक व स्पेस ग्रे जैसे उत्साहपूर्ण रंगों में उपलब्ध हैं।

श्री फत्तावत मेवाड़ तेरापंथी कांफ्रेस के अध्यक्ष बने

कांकरोली में 30 जून को श्री मेवाड़ जैन श्वेतांबर तेरापंथी कांफ्रेंस के अध्यक्ष पद के चुनाव हुए। इसमें उदयपुर के श्री राजकुमार फत्तावत विजयी रहे।

प्रवण कोठारी ने बताया कि कांफ्रेंस के कुल 3066 सदस्य हैं। इनमें से 1285 सदस्यों ने अपने मतदान का प्रयोग किया। श्री फत्तावत को 683 मत मिले। इनके विपक्षी फतहनगर के श्री सवाईलाल पोखरना थे जिन्हें 602 मत प्राप्त हुए। इस प्रकार श्री फत्तावत ने 81 मतों से विजयश्री प्राप्त की।

हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड हुआ सौर ऊर्जा से उजागर

दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी जिंक उत्पादक कंपनी हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड ने अपने प्लांट के आसपास के क्षेत्रों के चारों तरफ स्ट्रीट लाईट स्थापित की है। ये स्ट्रीट लाईट विनिर्माण दोष के कारण

ख़राब हो रहे थे, यह प्रबंधन के लिए बहुत बड़ी चिंता का विषय था। अत्यधिक बिजली बिल बढ़ने के कारण प्रबंधन भी चिंतित था। सौर ऊर्जा के लाभों के बारे में जागरूक होने के बाद प्रबंधन ने सौर ऊर्जा स्थापित करने का फैसला लिया।

इसी क्रम में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए सु-कैम नामक कम्पनी इस पहल में आगे आई। सु-कैम की पहल से हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड प्लांट के चारों ओर पूरे क्षेत्र को सौरकृत किया गया है। सनवे एल13 मॉडल की कूल 57 स्ट्रीट लाईट को प्लांट के चारों तरफ मुख्य स्थानों पर स्थापित किया गया है।

एल13 मॉडल 4 मीटर से 31लक्स देता है और खेत, छोटी सड़कों, जैसी जगहों के लिए शानदार प्रकाश समाधान प्रदान करता है। वे अन्य स्ट्रीट लाईट की तुलना में 30 से 50 प्रतिशत तक अधिक रोशनी भी प्रदान करते है हल्के वजन और कम रखरखाव लिथियम आयन बैटरी जैसे सुविधाओं के साथ। इस स्ट्रीट लाईट को एक पोल के सहारे बैटरी बैंक, सोलर पैनल और एलएडी या सीएफएल लाईट के साथ स्थापित किया गया है।

दिन के समय, सोलर पैनल्स सूर्य के प्रकाश को बिजली में परिवर्तित करता है और बैटरी में संगृहीत करता है। रात के समय स्ट्रीट लाईट, बैटरी में संगृहीत किये गये पॉवर से ऊर्जा लेकर रोशनी प्रदान करती है। स्ट्रीट लाईट की क्षमता भौगोलिक क्षेत्र पर निर्भर करती है। ये स्ट्रीट लाईट शाम 7 से सुबह 7 बजे तक जलती है।

सु-कैम के प्रबंध निदेशक कुँवर सचदेव ने कहा कि सौर स्ट्रीट लाईट भारत के ऊर्जा रोडमैप के भविष्य है। दूरदराज के क्षेत्रों जहां पूर्ण रूप से बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं है, वहां पर सोलर स्ट्रीट लाईट काम में आती है।

हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड ने सौर उर्जा अपनाकर समाज में एक उदाहरणात्मक मिशाल पेश की है। सोलर लाईट पर्यावरण के अनुकूल है और बिजली कटने पर प्रभावी समाधान है। सौर ऊर्जा में इस पूरे देश के परिदृश्य को बदलने की क्षमता है।

रैड प्लान्स के साथ स्मार्टफोन पर कॉम्प्लीमेंटरी बीमा सेवा

वोडाफोन इण्डिया स्मार्टफोन की सुरक्षा के लिए वोडाफोन रैड शील्ड प्लान्स लेकर आया है जो स्मार्टफोन के लिए कॉम्प्लीमेंटरी बीमा की सुविधा उपलब्ध कराता है। वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि वोडाफोन की यह पेशकश नए हैण्डसेट और छह महीने पुराने हैण्डसेट पर 50,000 तक का प्रोटेक्शन कवर देती है। वर्तमान में 1699 से अधिक के वोडाफोन रैड पोस्टपेड प्लान्स पर यह सेवा निशुल्क उपलब्ध है। वोडाफोन रैड शील्ड उद्योग जगत में पेश की गई एकमात्र पेशकश है, जो बेसिक हैण्डसेट डैमेज कवर (स्मार्टफोन में टूट-फूट के लिए कवरेज) के अलावा थैफ्ट कवर (चोरी होने पर बीमा कवरेज) के साथ स्मार्टफोन को पूरी तरह से सुरक्षित रखती है। उपभोक्ता 6 महीने पहले खरीदे गए हैण्डसेट के लिए भी इस कॉम्प्लीमेंटरी बीमा सेवा का लाभ उठा सकते हैं।

अमित बेदी ने कहा कि गूगल स्टोर और आईओएस पर उपलब्ध वोडाफोन रैड शील्ड ऐप स्मार्टफोन के लिए सम्पूर्ण सुरक्षा समाधान पेश करता है। थैफ्ट कवर (चोरी होने पर बीमा कवरेज) के अलावा वोडाफोन रैड शील्ड मैलवेयर प्रोटेक्शन और अन्य सिक्योरिटी फीचर्स के साथ आता है। वोडाफोन रैड शील्ड की यह सुविधा थर्ड पार्टी इन्श्योरेन्स कम्पनी के माध्यम से उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि 1699 रूपये से कम के रैड प्लान्स चुनने वाले उपभोक्ताओं के 720 रूपये का सालाना सब्सक्रिप्शन मासिक बिल में जोड़ा जाएगा, जिसका भुगतान उपभोक्ता को 12 आसान किश्तों में करना होगा। वोडाफोन रैड शील्ड एक साल की वैलिडिटी के साथ आता है। एक और पहलू जो वोडाफोन रैड शील्ड को खास बनाता है वह यह कि उपभोक्ता एक ही साल में दो बार तक बीमा कवरेज के लिए दावा कर सकता है। इस सेवा का लाभ उठाने के लिए उपभोक्ता वोडाफोन रैड शील्ड ऐप डाउनलोड कर सकते हैं अथवा हैण्डसैड से एसएमएस करें डीएसएस और इसे 199 पर भेज दें। ऐप मोबाइल हैण्डसैट का विश्लेषण करेगा और मापदण्डों से मिलान हो जाने पर अनुमोदन देगा।

वोडाफोन और एचएमडी ग्लोबल के बीच साझेदारी

वोडाफोन इण्डिया ने नोकिया के नए लॉन्च किए गए एंड्रोइड स्मार्टफोन्स के लिए एचएमडी ग्लोबल के साथ साझेदारी की है। वोडाफोन ने अपने डेटा स्ट्रॉन्ग नेटवर्क पर उन सभी उपभोक्ताओं के लिए एक्सक्लुज़िव ऑफर पेश किए हैं, जिन्होंने हाल ही में लॉन्च किए गए नोकिया के स्मार्टफोन-नोकिया 6, नोकिया 5 और नोकिया 3 खरीदे हैं।

वोडाफोन इण्डिया में चीफ कॉमर्शियल ऑफिसर संदीप कटारिया ने कहा कि नोकिया का स्मार्टफोन इस्तेमाल करने वाले सभी उपयोगकर्ता अतिरिक्त 4जी या 3जी डेटा ऑफर का लाभ उठा सकते हैं। नोकिया 5 और नोकिया 3 स्मार्टफोन खरीदने वाले उपभोक्ता 142 रुपये में 3 महीने के लिए एक जीबी डेटा की खरीद पर (या 3 रीचार्ज पर, जो भी पहले आए) 5जीबी डेटा का लाभ उठा सकते हैं।

इसके अलावा नोकिया 6 स्मार्टफोन खरीदने वाले उपभोक्ता मात्र 251 रुपये में 3 महीने के लिए एक जीबी डेटा की खरीद पर 10जीबी डेटा का लाभ उठा सकते हैं। वोडाफोन के पोस्टपेड उपभोक्ता 3 लगातार बिलिंग साइकल के लिए 5जीबी/ 10जीबी-4जी या 3जी डेटा प्रति माह का लाभ उठा सकते हैं, अगर उन्होंने अपने मासिक रेंटल प्लान पर कम से कम एक जीबी पैक एक्टिवेट किया हो।

एक्सक्लूज़िव ऑफर में उपभोक्ता अपने नए नोकिया स्मार्टफोन पर अतिरिक्त डेटा के फायदे पा सकेंगे। उपभोक्ता डेटा स्ट्रॉन्ग नेटवर्क वोडाफोन सुपरनेट पर इस अतिरिक्त डेटा का इस्तेमाल करके इंटरनेट ब्राउज़िंग कर सकते हैं, वीडियो कॉल कर सकते हैं, एलबम अपलोड कर सकते हैं और यहां तक कि हैवी फाईलों को डाउनलोड भी कर सकते हैं। इसके अलावा वे वोडाफोन प्ले पर 150 से अधिक लाईव टीवी चैनलों, 14000 से अधिक फिल्मों, टीवी शो का लुत्फ़ उठा सकते हैं। इन अनूठे ऑफर्स के साथ उपभोक्ता वोडाफोन सुपरनेट 4जी के बेस्ट ऐवर नेटवर्क के माध्यम से अपने दोस्तों एवं प्रियजनों के साथ जुड़े रह सकते हैं।

एचएमडी ग्लोबल के वाईस प्रेज़ीडेन्ट अजय मेहता ने कहा कि हमें खुशी है कि हमें भारत के प्रमुख दूरसंचार सेवा प्रदाता के साथ साझेदारी का मौका मिला है। यह साझेदारी नोकिया स्मार्टफोन के उपभोक्ताओं को सर्वश्रेष्ठ सेवाएं उपलब्ध कराने की हमारी प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है। हम अपने स्मार्टफोन्स की व्यापक रेंज के साथ उपभोक्ताओं को उत्कृष्ट सेवाओं को अनुभव प्रदान करने हेतू तत्पर हैं और देशभर में वोडाफोन की डेटा कनेक्टिविटी के साथ उन्हें और बेहतर अनुभव प्रदान करेंगे।

एक रूप भारत.....

(पृष्ठ एक का शेष)

जवांई को लूंगी, उपरणा, सफदे धोती और उपहार। तेलगु में वस्त्र के अलावा सामर्थ्य के अनुसार सोने-चांदी की छोटी-बड़ी मद भी दी जाती है। तेलगु जैसी ही परम्परा कन्नड़ एवं मलयालम में है।

आजकल लोग विद्या-अध्ययन, रोजगार, उद्योग-धंधे और व्यापार हेतु एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में धड़ल्ले से आ-जा रहे हैं। फलत: वहाँ का खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा अपनाते जा रहे हैं। इसमें इन्टरनेट और समाचार-पत्र भी पीछे नहीं हैं जिन्होंने अपने देश की सभी संस्कृतियों को सुदृढ़ तरीके से जोड़ कर रखा है। इसकी बदौलत इन्दौर का पोहे-जलेबी ठेठ राजस्थान, दिल्ली और पंजाब तक खाया जाने लगा है तो पंजाब का सरसों का साग और मक्की की रोटी गुजरात, महाराष्ट्र तक खाने के लिए मिल जाती है। तेलगु, तमिल, मलयालम और कन्नड़ का मुख्य खान-पान जिसमें इडली, वड़ा, डोसा, उतपम, उपमा, सांभर, नारियल की चटनी महाराष्ट्र, गुजरात होती हुई मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, दिल्ली को भी पारकर ठेठ उत्तरप्रदेश से भी आगे बिहार में स्वाद देने लग गई है। उत्तरप्रदेश का लिट्टी-चोखा दक्षिण पहुंच गया तो पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और जम्मू का छोला-भटूरा, पूड़ी, कचौड़ी राजस्थान से गुजरती हुई महाराष्ट्र-कर्नाटक से भी आगे चली गई है। महाराष्ट्र-गुजरात की पूरण-पौळी का स्वाद आजकल उत्तर भारतीय भी ले रहे हैं। किसी खास तरह के भोजन पर किसी एक क्षेत्र का एकाधिकार नहीं रहा।

अनगड़ अखाड़ा.....

(पृष्ठ दो का शेष)

अनगड़ में शरीर, माया और ब्रह्म संबंधी जानकारियों से युक्त अनुभव द्वारा आत्मजोत का प्रकाश करना रहता है। इसके लिए कई तरह की क्रियाओं से गुजरना पड़ता है। कुंडली को जगाना पड़ता है। आत्मा, वायु, प्रकृति तथा तत्वों की बारीकी को समझते हुए तदनुरूप व्यवहार में उनका अमलीकरण करना होता है।

तोषनीवाल ने बताया कि आत्मा के ही कई स्तर हैं। जैसे महतत्व महान आत्मा है। शुद्ध ब्रह्म शांत आत्मा है। साक्षी कूटस्थ मुख्य आत्मा है। देह सूक्ष्म मिथ्या आत्मा है। ऐसे ही प्राण, अपान, समान, उदान, ध्यान, कूर्म, किंकिला, देवदत्त, नाग तथा धनंजय दस वायु हैं। इनके स्थान और क्रियाओं को जानना जरूरी है। जैसे प्राण का स्थान हृदय में, अपान का गुदा में, समान का नाभि में, उदान का कंठ में, ध्यान का संधि में, कूर्म का नेत्र में, किंकिला का दिल में, देवदत्त का छाती में तथा धनंजय का सर्वत्र विचरण है। फिर हृदय कमल और उसके बारह पांखड़ी तथा बारह अक्षर और उनके भेदोपभेद होते हैं। छह हजार तरह का तो जाप ही है। चौदह लोक और सहस्त्र कमल जैसी कई बारीकियां हैं जो कठिन, महाकठिन क्रिया-साधना से ही जानी जा सकती हैं। उन्हें जगाना और उनका भेद पाना तो महा दुष्कर है।

स्पष्ट है, ये अखाड़े सामान्य जनों के लिए नहीं हैं। गृहस्थों के लिए भी पूर्ण अनुकूल नहीं हैं। इनमें रमनेवाला विशिष्ट त्यागी, विरागी, संत, महात्मा और असाधारण साधु पुरूष ही होता है।

महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन को भामाशाह सम्मान

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर को राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान प्रदान किया गया। मुख्य प्रशासनिक अधिकारी भूपेन्द्रसिंह आउवा ने यह सम्मान मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी एवं भाषा मंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी से प्राप्त किया।

श्री आउवा ने बताया कि 150 वर्ष पूर्व मेवाड़ शासकों द्वारा स्थापित जगदीश चौक स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय का भवन विरासत एवं ऐतिहासिक महत्व को ध्यान में रख फाउण्डेशन द्वारा जीर्णोद्धार करवाया गया। महाराणा शंभूसिंह ने प्रारंभ में इस बालिका विद्यालय का निर्माण करवाया फिर महाराणा सज्जनसिंह ने इसका नाम शंभूरत्न पाठशाला रखवाया। फाउण्डेशन ने प्रथम चरण में विद्यालय के बाहरी भाग के रखरखाव पर करीबन 33 लाख रूपए खर्च किए जबकि द्वितीय चरण में स्कूल के दो कक्षा कक्ष, एक हॉल तथा दो प्रयोगशालाओं का जीर्णोद्धार करवाया गया।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का शुभारंभ

उदयपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के उपक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के 26वें सेंटर का उद्घाटन मधुबन में हुआ। देश में सौ सेंटर खोलने के लक्ष्य के इस अभियान में अब तक कुल 26 सेंटर खुल चुके हैं। यह सेंटर मानव सेवा के लिए 'नो लोस नो प्रोफिट' के आधार पर चलेगा।

सेंटर पर समस्त चिकित्सकीय जांचें आधे मूल्य पर होगी। सेंटर का उद्घाटन अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष बी.सी. जैन, उनकी टीम, स्थानीय परिषद टीम, ट्रस्टीगण, सहयोगी तथा पूरे समाज की उपस्थिति में संस्कारक पदमचंद पटावरी एवं सहसंस्कारण नवीन वागरेचा द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत मुनिश्री सुखलाल स्वामी, मोहजीत कुमार तथा पृथ्वीराज द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण पंकज भंडारी द्वारा किया गया। स्वागत सभाध्यक्ष सूर्यप्रकाश मेहता, परिषद अध्यक्ष राकेश नाहर द्वारा किया गया। सेंटर का परिचय मयंक कोठारी एवं अब तक की यात्रा की जानकारी अभिषेक पोखरना ने दी। जनप्रतिधियों में यूआईटी चैयरमेन रवीन्द्र श्रीमाली, पार्षद शोभा मेहता ने ऐसे जनसेवा के कार्य के लिए तेयुप को बधाई प्रेषित की एवं ज्यादा से ज्यादा सहयोग की अपील की। कार्यक्रम के दौरान मेवाड़ कांफ्रेंस के कार्यकारी अध्यक्ष शैलेन्द्र बोर्दिया, प्रबुद्ध चिंतक राजकुमार फत्तावत, महासभा संरक्षक सवाईलाल पोखरना एवं विकास परिषद सदस्य पदमचंद पटावरी ने उदयपुर में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के शुरू होने की सभी को शुभकामनाएं दी।

जीएसटी का पहला बिल लाया खुशियां

उदयपुर। वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) लागू होने पर झीलों की नगरी के व्यापार जगत में भी उत्साह है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक देश, एक कर के नारे का स्वागत किया जा रहा है। पहले दिन व्यापारियों ने उत्साह दिखाते हुए जीएसटी बिलिंग के साथ अपने व्यवसाय में नए युग का सूत्रपात किया। चेटक सर्कल स्थित पार्श्वकल्ला पेपर्स पर डॉ. तुक्तक भानावत ने पेरामाउंट स्टेशनर्स के निदेशक नितेश जैन और रोहित जैन को कई व्यापारियों की मौजूदगी में जीएसटी का पहला बिल प्रदान किया। इस अवसर पर डॉ. भानावत ने कहा कि जीएसटी के माध्यम से देश में हुई ऐतिहासिक कर सुधार व कर एकीकरण क्रांति देश को अर्थव्यवस्था के नए शिखर पर ले जाएगा।

इस अवसर पर चार्टर्ड एकाउंटेंट हितेष कुदाल ने बताया कि अभी तक बिल में उत्पाद शुल्क, केंद्रीय बिक्री कर (सीएसटी) तथा वेट लगा कर माल बेचा जाता था परंतु जीएसटी आने के बाद बिल का पूरा फार्मेट ही बदल गया है। अब नए बिल में उपरोक्त सभी करों के स्थान पर केवल जीएसटी जो 'एसजीएसटी' तथा 'सीजीएसटी' में विभक्त है, लगाया जाएगा। उन्होंने बताया कि ऐसा स्टॉक जो 30 जून 2017 तक व्यापारी के पास पड़ा हुआ है, उस पर जो उत्पाद शुल्क लगा हुआ था, उसकी भी जीएसटी में छूट प्राप्त होगी। ऐसे स्टॉक की बिलिंग के लिए सबसे पहले लागत को उत्पाद शुल्क से कम कर दिया जाएगा, उसके बाद तत्कालीन जीएसटी दर लगा कर माल बेचा जाएगा। जीएसटी में बिल का प्रारूप काफी आसान है। इसमें सभी करों की जगह सिर्फ एक ही कर लग रहा है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

डॉ. नरेन्द्र धींग अध्यक्ष मनोनीत

रोटरी क्लब उदयपुर की वर्ष 2017-18 की कार्यकारिणी के लिए डॉ. एन. के. धींग अध्यक्ष नियुक्त किये गए हैं। कानोड़ में जन्मे श्री धींग वहीं के पं. उदय जैन महाविद्यालय में व्याख्याता और प्रिंसिपल रहे। बाद में उदयपुर के पेसिफिक कॉलेज में प्रिंसिपल एवं डायरेक्टर के रूप में एक दशक तक अपनी सेवाएं दी। श्री धींग वर्तमान में शिक्षा सेवा क क्षेत्र में सक्रिय हैं और कानोड़ के श्री जवाहर विद्यापीठ के सम्माननीय उपाध्यक्ष हैं।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	**11000/**
विशिष्ट सदस्य	**5000/**
आजीवन सदस्य	**3000/**
शब्दरंजन के सहयात्री	**1000/**
साहित्यिक चौपाल	**500/**
वार्षिक संस्थागत	**300/**
वार्षिक व्यक्तिगत	**250/**

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

भगवान जगन्नाथ रथयात्रा में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

चांदी के भव्य रथ पर सवार होकर भगवान जगन्नाथराय रविवार अपरान्ह

शहर भ्रमण पर निकले तो समूचे शहर का वातारण भक्तिमय हो गया। रथयात्रा का शहरवासियों ने अपूर्व स्वागत किया। रथयात्रा मार्ग में दोनों ओर बड़ी संख्या में लोग भगवान के मनोरथ स्वरूप के दर्शन करने को खड़े थे।

रथयात्रा से पूर्व प्रात: पांच बजे भगवान जगन्नाथ का दूध, दही, घी, गौमूत्र, पंचामृत से मंगलाचरण हुआ। प्रात: 7.30 बजे भगवान की श्रृंगार आरती की गई तथा पीले वस्त्रों का श्रृंगार धराया गया। प्रात: 11 बजे राजभोग की आरती हुई। इस दौरान मंदिर के कीर्तनकारों तथा भक्तजनों ने प्रभु के भजन गाए। दोपहर एक बजे मंदिर के छोटे रथ को मंदिर परिसर स्थित चार देवरियों की परिक्रमा करवाई गई। दोपहर 2.30 बजे छोटे रथ को जगन्नाथ भगवान के गर्भगृह में ले जाया गया तथा भगवान के स्वरूप को जयकारों के साथ जगदीश चौक में खड़े चांदी के रथ में विराजमान किया गया। भगवान जगन्नाथ के स्वरूप से पूर्व उनके सवारी निशान हाथी बाबा के स्वरूप को रथ के आगे खड़े छोटे रथ में विराजित किया गया। भगवान के स्वरूप को रथ में विराजित करते ही रथ के कपाट बंद कर दिए गए तथा पुजारियों द्वारा आरती की गई।

आरती के पश्चात अपरान्ह साढ़े तीन बजे रथयात्रा प्रारंभ हुई। रथा का रस्सा खींच के लिए जनसैलाब उमड़ पड़ा। इस अवसर पर मेवाड़ प्रताप दल के कार्यकर्ताओं ने 21 बंदूकों की सलामी दी। रास्ते भर में भजन मंडलियां भजनों का गान करती रहीं। हाथी-घोड़ा पालकी, जय कन्हैयालाल की..., जगन्नाथ स्वामी की जय..., एकलिंगनाथ की जय..., चारभुजानाथ की जय... का घोष गूंज उठा। रथयात्रा में सबसे आगे केसरिया वस्त्र पहनकर 501 महिलाएं सिर पर कलश लिये पारंपरिक गीत गाते हुए चल रही थी।

इनके पीछे बैंड, घोड़े, हाथी की सवारी चल रही थी। बैंड की मधुर धुन पर घोड़े करतब दिखाते चल रहे थे। इनके पीछे स्थानीय कलाकार कच्छी घोड़ी नृत्य करते हुए चल रहे थे। रथ के आगे महिलाएं सड़क को साफ करते हुए चल रही थी। रथ के पीछे सांई बाबा की सवारी थी। भगवान जगन्नाथ का रथ शहर के जिस रास्ते से निकलता, मार्ग में पूर्व से खड़े सैंकड़ों लोगों का सिर श्रृद्धा से झुक गया। रथयात्रा में शहर के अलावा आसपास के दर्जनों गांवों के ग्रामीण श्रृद्धालुओं ने भी भाग लिया। रथयात्रा जगदीश चौक से प्रारंभ होकर, घंटाघर, बड़ा बाजार, भड़भुजाघाटी, मुखर्जीचौक, धानमंडी, देहलीगेट, बापूबाजार, सूरजपोल, गुलाबबाग होते हुए पुन: रात 11 बजे जगदीश मंदिर पहुंची जहां भव्य आरती की गई और प्रसाद वितरित किया गया।

योग दिवस पर गृहमंत्री कटारिया के आतिथ्य में हुआ समारोह

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर जिला स्तरीय समारोह महाराणा भूपाल स्टेडियम पर गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया के मुख्य अतिथ्य में हुआ। गृहमंत्री ने योग को स्वास्थ्य के लिए कारगर बताते हुए इसे जीवन में नियमित अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि योग से जुड़ा व्यक्ति निरोगी और दीघायु को प्राप्त करता है। उन्होंने प्राचीन चिकित्सा पद्धति में योग को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए दादी-नानी के घरेलू नुस्खें भी बताए और इन्हे अपनाने की सलाह दी।

इस अवसर उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, यूआईटी अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली, जिला कलक्टर बिष्णुचरण मल्लिक, जिला पुलिस अधीक्षक राजेन्द्रप्रसाद गोयल अतिरिक्त जिला कलक्टर सी.आर. देवासी व ओ. पी. बुनकर, वीएसएम के ग्रुप कमाण्डर जे. पी. सिंह, कर्नल एस. एस. दवास, कर्नल चंडोक, कर्नल प्रतीक हमाल, लेफ्टिनेंट प्रेमशंकर श्रीमाली, आरएनटी प्राचार्य डॉ. डी. पी. सिंह, आयुर्वेद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. महेश दीक्षित, आयुर्वेद उपनिदेशक अशोक बाबू शर्मा, जिला आयुर्वेद अधिकारी बाबूलाल जैन, सहायक जिला आयुर्वेद अधिकारी डॉ. मुकेश कटारा, पतंजलि के मुख्य जिला संयोजक महेश जेटा, गुरूमुख कस्तुरी, जिला शिक्षा अधिकारी मधूसुदन व्यास, आरएनटी अधीक्षक डॉ. विनय जोशी, कैलाश राजपुरोहित सहित पार्षदगण, अन्य जनप्रतिनिधि, समाजसेवी, प्रशासनिक अधिकारी एवं बड़ी संख्या में महिलाओं, बच्चों एवं आमजनों ने योगाभ्यास किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के संयोजक डॉ. शोभालाल औदिच्य ने बताया कि योगाभ्यास योग प्रशिक्षक शुभा सुराना एवं मुख्य योगाचार्य संजय दीक्षित के नेतृत्व में डॉ. राजीव भट्ट, अशोक जैन, डॉ. इकबाल खान गौरी, डॉ. संजय माहेश्वरी, मुकेश पाठक, शेखर शर्मा, डॉ. हनुमंत सिंह, भविष्य औदिच्य, शारदा जालोरा, पंकज पंड्या, डॉ. विद्या आचार्य, श्वेता शर्मा, प्रमिला राठौड़, श्वेता चित्तौड़ा, सपना नागौरी, मीनाक्षी त्रिवेदी एवं निर्मला पालीवाल ने चार अलग-अलग मंचों से करवाया।

नोडल अधिकारी बाबूलाल जैन ने बताया उदयपुर जिले भर में सवा लाख से अधिक लोगों ने योगाभ्यास किया। जिला स्तरीय समारोह में 8 हजार लोगों सहित शहर के विभिन्न स्थानों पर लगभग 15 हजार लोगों ने योगाभ्यास किया। जिले के समस्त 17 ब्लॉक पर 12 हजार एवं 544 ग्राम पंचायतों में 98 हजार लोगों ने योग के प्रति उत्साह दिखाया।

'पधारो उदयपुर' के माध्यम से दुनियां जुड़ेगी झीलों की नगरी से

स्मार्ट सिटी उदयपुर से जुड़ने के लिए अब 'पधारो उदयपुर' के रूप में नवाचार किया गया है जो झीलों की नगरी को देश-दुनियां से जोड़े रखेगा।

'पधारो उदयपुर' एप का शुभारंभ महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने कम्प्यूटर पर क्लिक कर किया। सूचना केन्द्र सभागार में आयोजित इस शुभारंभ में पर्यटन उपनिदेशक सुमिता सरोच, सिक्योर मीटर के निदेशक अनन्या सिंघल, मुख्य आयोजन अधिकारी सुधीर दवे, एनआईसी के तकनीकी निदेशक जितेन्द्र वर्मा, उपनिदेशक (जनसम्पर्क) सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

महापौर कोठारी ने 'पधारो उदयपुर' एप को अभिनव कदम बताते हुए कहा कि इसमें विश्वभर से आने वाले पर्यटकों को महत्वपूर्ण जानकारी मिलने से वे उदयपुर आकर बेहतरीन लुत्फ उठा पाएंगे। सुमिता सरोच ने एप को पर्यटन के दृष्टिगत दूरगामी बताते हुए कहा कि इसमें उदयपुर आने से पूर्व पर्यटक को उदयपुर भ्रमण की जानकारी एवं उचित मार्गदर्शन मिलने से वह बेहतर प्लानिंग के साथ भ्रमण के लिए पहुंचेंगे।

फाइव स्प्लैश इंफोटेक प्रा. लि. के डायरेक्टर कपिल शर्मा ने ग्लोकल ट्रेवल एक्सपेरिएंसेस प्रा. लि. के ब्रांड में पधारो उदयपुर की शुरुआत की है। उनका कहना है कि टूरिज्म स्मार्ट सिटीज इनिशिएटिव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस मोबाइल एप का उपयोग शहर में आने वाले टूरिस्ट एवं अन्य विजिटर्स कर सकेंगे।

इस प्रोडक्ट के लिए उदयपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के सीईओ सिद्धार्थ सिहाग तथा जिला प्रशासन के महत्वपूर्ण सुझावों को एप में शामिल किया गया है। शुभारंभ से पहले ही एप के 500 यूजर रजिस्टर हो गए। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन जयशील शर्मा ने जबकि आभार संस्था के चैयरमेन एस. एन. शर्मा ने व्यक्त किया।

गृहमंत्री द्वारा पौने तीन सौ करोड़ के कार्यों का लोकार्पण-शिलान्यास

स्मार्ट सिटी लांचिंग के दो वर्ष पूरे होने के मौके पर गृहमंत्री गुलाबचंद

कटारिया ने स्मार्ट सिटी एवं अमृत योजना के तहत पौने तीन सौ करोड़ की लागत के दो कार्यों का लोकार्पण एवं छह कार्यों का शिलान्यास किया। नगर निगम प्रांगण में आयोजित समारोह में कटारिया ने कहा कि स्मार्ट सिटी योजना के तहत उदयपुर को 1 हजार 221 करोड़ रुपए का बजट मिला है जिससे होने वाले विकास कार्यों से शहर पूरी तरह से स्मार्ट बन जाएगा। कार्यक्रम में मेयर चंद्रसिंह कोठारी, यूआईटी चेयरमेन रवींद्र श्रीमाली, नगर निगम आयुक्त सिद्धार्थ सियाग सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे। नगर निगम आयुक्त सिद्धार्थ सियाग ने पावर पाइंट प्रजेंटेशन दिया।

कटारिया ने गुलाबबाग के पास सार्वजनिक निर्माण विभाग के गेरेज में करीब पचास लाख की लागत से विकसित की गई पार्किंग का लोकार्पण किया। स्वच्छ भारत मिशन के तहत रेल्वे स्टेशन के पास निर्मित पी फेब्रिकेटेड शौचालय का लोकार्पण किया। पिछोला झील में सीसारमा गांव से प्रवाहित मल अपशिष्ट को रोकने हेतु दो करोड़ की लागत से होने वाले कार्य का शिलान्यास किया। अमृत योजना के द्वितीय चरण में 73.33 करोड़ की लागत से सीवरेज सिस्टम को ठीक करने व नई सीवरेज लाइन बिछाने का कार्य किया जाएगा। इसी प्रकार करजाली हाउस के पास 5 एमएलडी, एफसीआई गोदाम के पास 10 एमएलडी तथा एकलिंगपुरा में 25 एमएलडी का सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाया जाएगा। इस कार्य में हिंदुस्तान जिंक का सहयोग मिल रहा है।

शहर के बीच से गुजरने वाली आयड़ नदी में गिरने वाले नालों व सीवरेज को रोकने के लिए 120 करोड़ की लागत के कार्यों का शिलान्यास किया गया। शहर परकोटे के भीतर 8 प्राचीन बावड़ियों के जीर्णोद्धार एवं संरक्षण के कार्यों पर पचास लाख रुपए व्यय किए जाएंगे। ओपन एयर जिम की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए शहर में 6 स्थानों पर नए ओपन एयर जिम लगाए जाएंगे।

पीआईएमएस में गुर्दों की विकृति का सफल ऑपरेशन

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक महिला के गुर्दों में हुई विकृति का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि चित्तौड़गढ़ निवासी उदई बाई (63) को गत दिनों पीआईएमएस हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। उदई बाई 3 महिनों से पेट की पीड़ा से परेशान थी।

पीआईएमएस में महिला को यूरोलोजिस्ट डॉ. विकास गुप्ता को दिखाया गया। महिला की जांच की तो पता चला कि उसके गुर्दों मे जन्मजात विकृति है जिसके कारण गुर्दे सामान्य स्थान पर ना होकर विपरीत दिशा में घूमे गए थे। इसके अलावा महिला के पेट में बड़े आकार की पथरी भी थी। इस पर डॉ. विकास गुप्ता और उनकी टीम ने तुरंत महिला का ऑपरेशन किया औरर गुर्दों को विकृति को दूर करने के साथ ही पथरी भी निकाल दी। महिला अब पूर्ण रूप से स्वस्थ है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।